Page No. 1-37 / JULY2022

मेरी खेती

- खेत खलियान
- पशुपालन - पशुचारा
- सब्जी
- मशीनरी
- फल
- किसान समाचार
- सरकारी नीतियां
- औषधीय खेती
- धान विशेषांक
- आम की लोकप्रिय किस्में

+91 766 8256 275
krishan@merikheti.com
www.merikheti.com

NEW HOLLAND
AGRICULTURE

A brand of CNH Industrial

MERI KHETI

न्यू हॉलैंड घर लाएं, अपनी शान बढ़ाएं

नया

3037 TX

SONALIKA
LEADING AGRI EVOLUTION
MERIKHETI
MM 35
Mileage Master
37Hp
MM-35
SONALIKA

संपादकीय

देश में प्राकृतिक खेती को बढावा

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए अब यूपी में बोर्ड का गठन करने की बात कही। सीएम योगी का मानना है कि धरती की रक्षा के लिए प्राकृतिक खेती अपनानी होगी। शीघ्र ही यूपी में इसके बोर्ड के गठन की प्रक्रिया शुरू होगी।

उन्होंने कहा कि यूपी में सबसे अच्छा जल संसाधन के साथ-साथ सबसे अच्छी उर्वरा भूमि है। पूरे देश का 12 फीसदी भूभाग यूपी में है। पूरे देश में यूपी 20 फीसदी कृषि उत्पादन करता है।

लखनऊ में विश्व बैंक एवं एमएसएमई के तत्वावधान में हुई बैठक में सीएम योगी ने कहा कि ऋषि और कृषि एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। गोवंश आधार था। अब फिर से उसी ओर जाना होगा। कम लागत में केवल प्राकृतिक खेती ही किसानों की आमदनी कई गुना बढ़ा सकती है। यदि प्राकृतिक खेती के बढ़ावा मिले तो स्थिति काफी बेहतर हो सकती है। देश में कृषि पहले नम्बर पर है। और एमएसएमई दूसरे नम्बर पर है। आज प्रदेश में 90 लाख एमएसएमई इकाइयां उपलब्ध हैं। यदि दोनों में एक-दूसरे के साथ बेहतर तालमेल हो जाए तो काफी बेहतर परिणाम आ सकते हैं।

यूपी में गंगा के दोनों तटों पर पांच किमी तक खास तौर पर तटवर्ती 27 और बुंदेलखंड के 7 यानी कुल 34 जिलों में प्राकृतिक खेती के लिए अभियान शुरू हो चुका है। जल्दी ही पूरे प्रदेश में इसका विस्तार किया जाएगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी चाहते हैं कि पूरा देश विषमुक्त हो जाए। इस अभियान में राज्य सरकारें भी पीएम की मंशा के अनुरूप काम कर रहीं हैं। और लगातार प्रदेश सरकारों की ओर प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए प्रयास किया जा रहा है।

प्राकृतिक खेती के बारे में किसानों को जागरूक करने के लिए किसान गो. ष्ठियों का आयोजन किया जाएगा। जिसमें किसानों को प्राकृतिक खेती के फायदे बताए जाएंगे। जल्दी ही इस पर काम शुरू हो जाएगा।

दिलीप यादव
मेरी खेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
(संरक्षक मार्गदर्शक)

डॉ. एमसी शर्मा,
सेवानिवृत्त निदेशक एवं
कुलपति आईवीआरआई इज्जतनगर

प्रो. ए पी. सिंह
पूर्व कुलपति वेटरनरी
विश्वविद्यालय मथुरा

डॉ.एस.के.गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ.ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण
(सेवानिवृत्त) उत्तर प्रदेश

डॉ. उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय कुम्हेर
भरतपुर राजस्थान

श्री सुधीर अग्रवाल
(प्रगतिशील किसान)

दिलीप यादव
(विशेषज्ञ,मेरीखेती)

तेजपाल सिंह
(प्रगतिशील किसान)

कृष्ण पाठक
(विशेषज्ञ,मेरीखेती)

धान की खेती की शुरू से लेकर अंत तक संपूर्ण जानकारी, जानिए कैसे बढाएं पैदावार

हमारा देश भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां की लगभग एक तिहाई जनसंख्या कृषि पर निर्भर करती है। भारत में अनेक प्रकार की फसलें बोई जाती हैं। प्रत्येक फसल के बोने व काटने का समय अलग अलग होता है। इसी प्रकार धान की भी फसल है जो एक प्रकार की खरीफ की फसल है। यह हमारे देश को लोगों का एक प्रमुख खाद्यान्न है। इसके अलावा मक्का के बाद जो फसल सबसे ज्यादा बोई जाती है वो धान है। अगर इसकी खेती में पर्याप्त सावधानी बरती जाए तो इससे किसान ज्यादा मुनाफा कमा सकता है। धान की खेती की संपूर्ण जानकारी ।

धान की खेती में सबसे महत्वपूर्ण कार्य

धान की खेती में सबसे महत्वपूर्ण कार्य है अच्छे बीज का चयन करना। कई बार किसान महंगे बीज खरीदने के बावजूद भी अच्छी फसल नहीं उगा पाता। इसका मुख्य कारण है उसके द्वारा एक स्वस्थ बीज का चयन ना कर पाना। इसके कारण चुना गया बीज महंगा नहीं बल्कि वहां की जलवायु के अनुरूप होना चाहिए।

हम जानते हैं कि धान की खेती हमारे देश के विभिन्न हिस्सों में की जाती है। विभिन्न हिस्सों की। जलवायु भी भिन्न भिन्न होती है इसके लिए किसानों को वहां की जलवायु के हिसाब से उन्नत बीजों का चयन करना चाहिए।

बुवाई का समय

धान की फसल एक प्रकार की खरीफ की फसल है जो मुख्य रूप से बरसात शुरू होने के पहले बोई जाती है। यह फसल मई की शुरुआत में बोई जाती है, ताकि मानसून आते ही किसान धान की रोपाई शुरू कर दें। धान की फसल में मुख्य रुप से ध्यान रखने योग्य बात बीज का शोधन है इसमें किसान कई महंगे बीजों को खरीद कर फसल में अच्छी लागत नहीं पा पाते। इसके लिए किसानों को उच्च गुणवत्ता के बीच के साथ बीजों का उपचार भी करना चाहिए।

बीजोपचार

आज की खेती में मुख्य बात बीजों का चयन करना है एवं बीजों का शोधन है। किसानों को बीजों के शोधन के प्रति जागरूक होना चाहिए ऐसा करने से धान की फसल को विभिन्न प्रकार के रोगों से बचाया जा सकता है धान की 1 हेक्टेयर की रोपाई के लिए बीज शोधन की प्रक्रिया में सिर्फ 25–30 खर्च करने होते हैं।

बीज उपचार करने के लिए हमें एक घोल तैयार करना होता है। इस घोल को तैयार करने के लिए एक बर्तन में 10 लीटर पानी लेते हैं और उसमें लगभग 1.5 किलो नमक मिलाते हैं अब इस पानी ने एक आलू या फिर एक अंडा डालते हैं अगर आलू घील पर तैरने लगे तो समझ जाओ कि हमारा होल तैयार हो गया है और अगर आलू या अंडा घोल पर नहीं तैरता है तो पानी में उस समय तक नमक मिलाते रहें जब तक कि आलू घोल तैरने ना लगे।

अब इस घोल में धीरे–धीरे करके धान के बीज डालते हैं जो भी इस घोल के ऊपर तैरने लगते हैं बेबीज कम गुणवत्ता के होते हैं उन्हें निकाल कर बाहर फेंक देना चाहिए और जो भी बोल में डूब जाते हैं वह बीज बुवाई के योग्य होते हैं। इस गोल के माध्यम से हम धान के बीजों का शोधन तीन से चार बार तक कर सकते हैं। बीजों का
शोधन करने के बाद प्राप्त बीजों को तीन से चार बार पानी में अच्छी तरह से धो लेना चाहिए।

क्षेत्र के हिसाब से धान की उन्नत किस्मों का चुनाव

हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की मिट्टी और जलवायु पाई जाती है ऐसे में धान की अच्छी फसल पाने के लिए क्षेत्र के हिसाब से बीजों का चयन भी एक प्रमुख कार्य है इसके लिए उस क्षेत्र की जलवायु के हिसाब से बीजों का चयन किया जाता है।

बीज की बुवाईध्पौधों की रोपाई

बीजों की बुवाई के लिए सबसे पहले जमीन को बीजों की बुवाई के योग्य बनाया जाता है। इसके लिए किसान एक नर्सरी तैयार करें और मुख्य खेत में रोपाई करें। सबसे पहले किसान पौधों को नर्सरी में तैयार करें इसके बाद उसे जड़ से उखाड़ कर खेत में ले जाकर उसकी रोपाई करें रोपाई में पौधों की बीच की दूरी का ध्यान रखना चाहिए। एक जगह पर एक से दो पौधों की ही रोपाई की जाए।
जिस खेत में पानी ना भरता हो उस खेत में धान की रोपाई श्रीविधि से करें। इस विधि में खेत में पानी ना भरने दें इसमें खेत की समय–समय पर सिंचाई करते रहें इस विधि में सिंचाई करने के लिए गेहूं के जैसे ही सिंचाई करें। और धान का प्रबंधन सभी धान की तरह करें।

धान की रोपाई

दोस्तों आज हम बात करेंगे, धान की रोपाई की यदि आप एक किसान भाई हैं और आपको धान की रोपाई की पूरी जानकारी सही तरह से मालूम नहीं है, तो आप की फसल खराब हो सकती है। इसलिए आप धान की रोपाई की सभी प्रकार की आवश्यक बातें को जानने के लिए हमारे इस पोस्ट के अंत तक बने रहें

धान की रोपाई करने का तरीका

धान की रोपाई करने से पहले खेत को अच्छी तरह से दो से तीन बार गहरी जुताई की आवश्यकता होती है। किसान भाई ध ान की रोपाई करने के लिए एक हफ्ते पहले ही खेत की अच्छी तरह से सिंचाई कर लेते हैं। रोपाई करने के लिए हैरो की आवश्यकता पड़ती है यह जुताई लगभग दो से तीन बार हैरो द्वारा की जाती है। जुताई करने के बाद खेत को अच्छी तरह से पानी से भर दिया जाता है। खेतों में पडलर और टिलर की सहायता से जुताई की जाती है। जताई करने के बाद खेतों में पाटा लगाकर मिट्टी को अच्छी तरह से समतल बना दिया जाता है।

धान की रोपाई करते समय खाद का उपयोग

धान की फसल किसानों के लिए बहुत ही उपयोगी होती है। इस फसल से किसान को काफी मुनाफा होता है। धान की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए आखिरी जुताई में किसान लगभग 100 से लेकर 150 कुंटल पर हेक्टर गोबर की सड़ी खाद का इस्तेमाल कर खेतों में डालते हैं। खाद डालने के साथ ही साथ लगभग उर्वरक 120 किलोग्राम वही नत्रजन 60 किलोग्राम तथा फास्फोरस 60 किलोग्राम पोटाश तत्वों का इस्तेमाल करते हैं। इन खादो का इस्तेमाल करने से धान की अच्छी फसल का उत्पादन होता है।

धान की फसल में पहली खाद कब डालें

कृषि वैज्ञानिकों का कहना है कि सूर्य प्रकाश की कमी हो जाने से फसलें काफी नाजुक और कमजोर हो जाती है। ऐसी स्थिति में आप को समय रहते ही यूरिया खाद का इस्तेमाल करना चाहिए। 15 से 20 दिन के अंदर पौधों को सूर्य प्रकाश ना मिले तो यूरिया खाद का इस्तेमाल करें। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार इस तरीके को अपनाने से फसल खराब नहीं होने पाती और धान की फसल की अच्छी पैदावार होती है।
धान की अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए खाद डालने के इस तरीके को अपनाना आवश्यक होता है।

धान की रोपाई करने के बाद, खाद कितने दिनों में डाले

किसानों के अनुसार धान की रोपाई करने के बाद यदि ऐसा लगता है। कि धान की फसल में खाद डालने की आवश्यकता है की नही तभी फसलों में खाद डालें। धान की रोपाई में लगभग 35 दिनों के बाद खाद डालते हैं। परंतु बिना कृषि वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार धान की फसल में खाद ना डालें।

धान की फसल में नमक का इस्तेमाल

धान खरीफ की सबसे प्रमुख फसल मानी जाती है। अल्पवष. ा के मौसम में लगभग 15 दिनों के लिए फसलों को सुरक्षित रखने के लिए नमक का छिड़काव करना उपयोगी होता है। नमक के छिड़काव से फसल बारिश से पूरी तरह सुरक्षित रहती है। नमक छिड़काव से भूमि में नमी बनी रहती है। इस प्रक्रिया को अपनाने से भूमि की उर्वरक क्षमता में भी कोई कठिनाई या फर्क नहीं पड़ता है। इसीलिए नमक का छिड़काव करना धान की फसल के लिए उपयोगी होता है।

धान की फसल में नमक का इस्तेमाल

धान खरीफ की सबसे प्रमुख फसल मानी जाती है। अल्पवर्षा के मौसम में लगभग 15 दिनों के लिए फसलों को सुरक्षित रखने के लिए नमक का छिड़काव करना उपयोगी होता है। नमक के छिड़काव से फसल बारिश से पूरी तरह सुरक्षित रहती है। नमक छिड़काव से भूमि में नमी बनी रहती है। इस प्रक्रिया को अपनाने से भूमि की उर्वरक क्षमता में भी कोई कठिनाई या फर्क नहीं पड़ता है। इसीलिए नमक का छिड़काव करना धान की फसल के लिए उपयोगी होता है।

कभी—कभी ऐसा होता है, कि धान की फसल में फुदका रोग लगने की संभावना बन जाती है। यह स्थिति फसलों में पानी भर जाने के कारण पनपती है।

धान की फसल में कीटनाशक का उपयोग

मान लीजिए अगर फसलों में फुदका रोग लग गया हो तो, फसलों की सुरक्षा करने के लिए कीटनाशक क्लोरोपाइरीफास कि लगभग 1 मिलीलीटर मात्रा को पूरे खेतों में अच्छी तरह से छिड़काव कर दे।

धान की प्रमुख किस्में

धान की प्रमुख किस्में कुछ इस प्रकार हैरू

धान की किस्में सिंचित दशा, जो सिंचित क्षेत्रों मे जल्दी पकने वाली किस्में कही जाती है।

धान की दूसरी किस्म पूसा जो लगभग 169 दिनों में पक जाती है। धान की कुछ लोकप्रिय किस्म पूसा बासमती 1718, पूसा बासमती 1728, कावेरी 468, पूसा बासमती 1692, पूसा 1886, पूसा—1509 आदि है। धान की नरेंद्र किस्म जो 80 दिनों का समय लेती है। पंत धान 12 तथा मालवीय धान—3022, उसके बाद नरेन्द्र धान—2065, धीमी पकने वाली पंत धान 10, पंत धान—4, और सरजू—52, नरेन्द्र—359, नरेन्द्र—2064, नरेन्द्र धान—2064, पूसा—44, पीएनआर लगभग प्राप्त की गई जानकारियों के अनुसार 381 प्रमुख किस्में मौजूद है।

धान की अधिक पैदावार प्राप्त करने के लिए निम्न बातों पर ध्यान दे

कुछ परिस्थितियां में जैसे, क्षेत्रीय जलवायु तथा मिट्टी का चयन, सिंचाई का साधन होना, जलभराव की समस्या, बुवाई कैसे करें, रोपाई की व्यवस्था आदि समस्याओं से बचने के लिए पहले ही प्रबंध बनाएं। धान की रोपाई करते समय हमेशा अच्छी बीज प्रजाति का चयन करें।

हमेशा धान की रोपाई करते समय शुद्ध प्रमाणित एवं शोधित बीज ही बोयें। ताकि फसल खेतों में पूरी तरह से उत्पादन हो सके।

खेतों में खाद डालते समय अच्छी तरह से मृदा परीक्षण हो जाने के बाद ही संतुलित उर्वरकों को हरी खाद एवं जैविक खाद में मिलाकर खेतों में रोपण करें। खाद की उचित मात्रा तथा समय पर खादो को खेतों में डालना उपयोगी होता है।

सही समय पर बुवाई तथा सिंचाई करना आवश्यक होता है।

धान के पौधों की संख्या सुनिश्चित इकाइयों पर को जानी चाहिए।

कीट रोग एवं खरपतवार नियंत्रण बनाए रखने के लिए समय—समय पर कृषि विशेषज्ञों के अनुसार रासायनिक खादों का इस्तेमाल करते रहना चाहिए। जिस से पूर्ण रुप से फसलों की सुरक्षा हो सके।

शुद्ध एवं प्रमाणित बीज का इस्तेमाल

यदि आप शुद्ध एवं प्रमाणित बीज का इस्तेमाल करते हैं तो धान की उत्पाद क्षमता अधिक हो जाती है। कृषक इन उन्नत बीजों का इस्तेमाल अपने अगले उत्पाद के लिए भी कर सकते हैं। तथा तीसरे प्रमाणित बीज लेकर बुवाई कर सकते हैं। इस प्रकार शुद्ध एवं प्रमाणित बीजों का इस्तेमाल करना उपयोगी होता है।

दोस्तों हम उम्मीद करते हैं हमारा यह आर्टिकल धान की रोपाई आपको पसंद आया होगा। हमारे इस आर्टिकल में धान की रोपाई से जुड़ी सभी प्रकार की आवश्यक बातें मजबूत हैं। जो आपके काम बहुत काम आ सकती है यदि आप हमारी दी हुई जानकारियों से संतुष्ट हैं। तो हमारे इस आर्टिकल को ज्यादा से ज्यादा सोशल मीडिया तथा अपने दोस्तों के साथ शेयर करें।

खरीफ के सीजन में यह फसलें देंगी आप को कम लागत में अधिक फायदा

हम जानते हैं कि खरीफ की फसल बोने का समय चल रहा है। इस मौसम में किसान खरीफ की विभिन्न फसलों से काफी लाभ कमाते हैं और बारिश के मौसम में किसान सिंचाई की लागत से बच सकते हैं।

जून का आधा महीना बीत चुका है और जुलाई आने वाला है। ऐसे में यह समय खरीफ की फसलें बोने के लिए उपयुक्त माना जाता है। किसान इस समय में औषधीय पौधों की खेती करके भी अधिक लाभ कमा सकते हैं। क्योंकि यह मौसम औषधि पौधों के लिए उपयुक्त माना जाता है।

अभी खरीफ की फसलें बोने का समय चल रहा है। इसमें किसान धान, मक्का, कपास, बाजरा और सोयाबीन जैसी विभिन्न फसलों की खेती में करते हैं। मानसून आने के साथ ही इन फसलों की रोपाई बुवाई में तेजी आई है।

ऐसे में कुछ किसान उपरोक्त खरीफ की फसलें उगा रहे हैं और कुछ किसान इससे हटकर कई औषधीय पौधों की खेती कर रहे हैं। ऐसा करने का किसानों का उद्देश्य केवल कम लागत में अधिक मुनाफा प्राप्त करना है। औषधीय पौधों की खेती करने से किसान को अधिक लाभ मिलता है। वही
सरकार के द्वारा किसानों को मदद भी दी जाती है। इस वजह से किसानों का ध्यान औषधीय पौधों की खेती करने की और अग्रसर हो रहा है।

देश के किसान इस समय मेडिसिनल प्लांट्स की खेती भी कर रहे हैं। इनकी मांग बाजार में अधिक होने के कारण किसानों को इनकी अच्छे दाम मिलते हैं। वहीं किसानों को सरकारी मदद भी मिलती है।
इस समय जिन औषधीय पौधों की खेती की जा सकती है, उनमें सतावर, लेमन ग्रास, कौंच, ब्राह्मी और एलोवेरा प्रमुख रूप से हैं।

कौंच की खेती करने से फायदा

कौंच एक झाड़ीनुमा पौधा होता है, जो कि मैदानी क्षेत्र में पाया जाता है। इस पौधे की खेती किसान 15 जून से लेकर 15 जुलाई के बीच में कर सकते हैं। 1 एकड़ में कौंच की खेती करने में करीब 50 से 60 हजार रुपए का खर्च आता है जबकि कमाई प्रति एकड़ 2 से 3 लाख रुपए तक होती है।
इसकी बुवाई के लिए प्रति एकड़ 6 से 8 किलो बीज की जरूरत होती है।

ब्राह्मी की खेती की जानकारी

ब्राह्मी का इस्तेमाल विभिन्न प्रकार की दवाएं बनाने में किया जाता है। यह एक लोकप्रिय औषधीय पौधा है। इसकी खेती करने के लिए बारिश कम समय सबसे उपयुक्त माना जाता है। यह एक ऐसा पौधा है जिसकी डिमांड हाल ही के वर्षों में काफी बढ़ी है। किसान इस वक्त ब्राह्मी के साथ एलोवेरा की खेती भी कर सकते हैं। इसकी खेती जुलाई से लेकर अगस्त के बीच में की जाती है। कई कंपनियां इस पौधे की खेती करने के लिए किसानों को सीधे कॉन्ट्रैक्ट देती हैं।

सतावर की खेती से किसानों को लाभ

खरीफ के मौसम में किसान सतावर और लेमनग्रास जैसे औषधीय पौधों की खेती कर सकते हैं। दोनों की खेती अलग अलग समय पर की जाती है। लेमनग्रास की खेती के लिए फरवरी से लेकर जुलाई तक का समय उपयुक्त होता है। लेकिन शतावर के लिए अगला पखवाड़ा सबसे उपयुक्त माना जाता है।

सतावर की खेती से किसान काफी अधिक फायदा कमाते हैं। वहीं लेमनग्रास की खेती करने से यह फायदा होता है कि इसे एक बार लगाने पर किसान इससे कई साल तक पैदावार प्राप्त कर सकते हैं।

गर्मी में किसानों के आय का नया जरिया ताड़ गोला, जानिए इसके फायदे

जैसा कि हम सभी लोग जानते हैं कि गर्मी का समय चल रहा है और इस बार गर्मी का भयानक रुप देखने को मिल रहा है। एसे में यह भयानक गर्मी किसानों के लिए आय का एक नया जरिया ले कर आई है। इस खतरनाक गर्मी में लोग ताड़गोले का इस्तेमाल ज्यादा कर रहे हैं। जो न केवल लोगों की प्यास बुझाता है बल्कि उन्हें काम करने के लिए एक नई ऊर्जा देता है।

ताड़गोला को स्थानीय भाषा में तालसाजा कहा जाता है, यह भारत के पूर्वी राज्यों में पाया जाता है। गर्मी के चलते ता. ड़गोला की खपत बढ़ गई है। जो ताड़गोले बेचने वालों के लिए खुशी की बात है। इसे मराठी और हिंदी में ताड़गोला एवं तमिल में नुंगू कहा जाता है, अंग्रेजी में आइस—ऐप्पल (Ice-apple or Palm fruit)। ताड़गोले की इस बढ़ती खपत के कारण किसानों की आय में काफी वृद्धि हुई है।

ताड़गोले के एक विक्रेता नागेंद्र बेहरा ने बताया, “ गर्मी का स्तर हर रोज बढ़ने के साथ ताड़गोला के मांग भी आए दिन बढ़ती जा रही है। मैने दो दिनों के अंदर लगभग 600 ताड़गोले बेचे जिसकी वजह से हमारी कमाई काफी हो रही है और प्रत्येक ताड़गोले की कीमत रुपये 10 है। इसके साथ ही ताड़गोले के एक और विक्रेता अशोक दास कहते हैं कि ग्रामीण इलाकों में बहुत से लोग अपनी प्यास बुझाने के लिए हरे नारियल अथवा ताड़गोले का इस्तेमाल ज्यादा करते हैं।कभी—कभी ऐसा होता है, कि धान की फसल में फुदका रोग लगने की संभावना बन जाती है। यह स्थिति फसलों में पानी भर जाने के कारण पनपती है।

ताड़गोले के फायदे

जिस प्रकार से नारियल गर्मियों में प्यास बुझाता है यह भी उसी प्रकार का दिखने वाला फल होता है। इस भयंकर गर्मी के प्रकोप की वजह से इसकी मांग ज्यादा रहती है। जिस प्रकार जैली रसदार फलों में है उसी प्रकार से यह भी एक रसदार फल है। जिसका सेवन करने से लोगों को थकान से राहत और आवश्यक ऊर्जा प्राप्त होती है। इस फल में कार्बोहाइड्रेट, फाइ. टोन्यूट्रिएंट्स और कैल्शियम जैसे आवश्यक पोषक तत्व होते हैं। फल में कई प्रकार के विटामिन भी पाए जाते हैं। यद्यपि इसमें कैलोरी की मात्रा कम होती है लेकिन इसमें प्रोटीन, आयरन पोटेशियम, जिंक और फास्फोरस जैसे कई प्रकार के आवश्यक पोषक तत्व पाए जाते हैं। यह फल न केवल गर्मी में लाभदायक होता है, बल्कि कई लोग इसे सुपर फूड भी कहते हैं।

गर्मी के दिन काफी कठिन दिन होते हैं जिसमे लोग डिहाइड्रेशन का शिकार भी हो जाते हैं, एसे में इस फल का सेवन काफी फायदेमंद है। यह फल शरीर को ठंडा रखने का भी काम करता है यह विटामिन्स और मिनरल्स से भरपूर होता है जो हमारे लिए बहुत आवश्यक है। यह हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए भी बहुत आवश्यक है।

इसके आगे शरत साहू कहते हैं, “इसके रस में काफी पोषक तत्व होते हैं जो हमे ऊर्जा देने के साथ–साथ डिहाइड्रेशन से बचाने का काम भी करता है।”

ताड़गोलारू आय का स्रोत

बढ़ती गर्मी के कारण किसान ताड़गोले बेच कर अपनी कमाई कर रहे हैं। यह उनकी आजीविका का प्रमुख स्रोत है। इसके माध्यम से किसान काफी कमाई कर लेते हैं। ओडिशा में भी ताड़गोला बेचकर काफी किसान अपना जीवन यापन कर रहे हैं।

केंद्रपाड़ा शहर के विजय बेहरा जो की एक ताड़ विक्रेता हैं, ने बताया, ”मैने पिछले हफ्ते दो पेड़ों से लगभग पांच सौ ताड़गोले तोड़कर पांच हजार रुपए कमाए थे।“

Subscribe to our
YouTube Channel
www.youtube.com/c/MeriKheti

उसी गांव के एक ताड़गोले के विक्रेता नलिनीकांत सेठी ने बताया, ”ताड़ के पेड़ पर चढ़ कर ताड़गोला इकट्ठा करना मुश्किल है। युवा इस काम को करने में कोई दिलचस्पी नहीं रखते जिसकी वजह से हमे ताड़गोले तोड़ने वाले आसानी से नहीं मिलते। इसलिए हमे ताड़गोले तुड़वाने के लिए बूढ़ों पर निर्भर रहना पड़ता है और चढ़ने वाला भी एक ताड़ के पेड़ पर चढ़ने के सौ से दो सौ रुपए लेता है।

केंद्रपाड़ा गांव के एक और व्यक्ति ने हमें बताया कि गर्मी के मौसम में केंद्रपाड़ा के लगभग 10000 परिवारों के ताड़गोला आय का एक प्रमुख स्रोत रहा है। लेकिन अब स्थिति ऐसी नहीं है क्योंकि सन 1999 के बाद कई पेड़ चक्रवातों में उखड़ गए थे जिसकी वजह से अब लगभग 5000 लोग ताड़ के पेड़ की खेती पर निर्भर हैं।

भेड़ , बकरी, सुअर और मुर्गी पालन के लिए मिलेगी 50% सब्सिडी, जानिए पूरी जानकारी

अगर आप भी भेड़, बकरी, सुअर या मुर्गी पालन से जुड़े काम में इच्छुक हैं और इनसे जुड़ा व्यवसाय शुरू करना चाहते हैं, तो आप भी इस योजना का लाभ ले सकते हैं। इसके अंतर्गत आपको 50% की सब्सिडी दी जाती है।

हमारे देश में काफी लोग अभी भी पालतू पशुओं को पालते हैं जो उनकी जीविका का प्रमुख स्रोत है। देश में एसे ही पशुपाल. कों को बढ़ावा देने के साथ साथ उन्हें उचित रोजगार देने की व्यवस्था इस योजना में की गई है। केंद्र सरकार ने इस मिशन को नेशनल लाइवस्टॉक मिशन ½National Livestock Mission½ नाम से शुरु किया है। इस मिशन के तहत अपना फार्म शुरु करने वाले किसानों को पशुपालन विभाग की तरफ से ५०% सब्सिडी का प्रावधान है।

उत्तराखंड लाइवस्टॉक डेवलपमेंट बोर्ड के अपर प्रबंधक डॉ विशाल शर्मा इस योजना के बारे में अपनी राय देते हुए कहते हैं, "ये छोटे पशुओं जैसे कि भेड़, बकरी और सुअर के लिए के लिए योजना है, इसमें कोई भी पशुपालक अपना कारोबार शुरू करना चाहता हो तो वो इसका लाभ ले सकता है।"

इस योजना में अगर कोई पशुपालक भेड़ या बकरी पालने का इच्छुक है तो उसे 500 मादा बकरी के साथ ही 25 नर भी पालने होगें। अगर कोई भी व्यक्ति इस योजना का लाभ उठाना चाहता है तो वह भारत सरकार की वेबसाइट https://nlm-udyamimitra-in/ पर जाकर इसमें आवेदन कर सकता है।

इस योजना में आगे डॉ. विशाल बताते हैं, "अगर आप इसके लिए फॉर्म भरते हैं और किसी बैंक की डिटेल सबमिट करते हैं तो उस बैंक अकाउंट में मिलने वाली कुल राशि की आधी राशि होनी चाहिए, जैसे कि अगर आपका प्रोजेक्ट २० लाख का है तो आपके खाते में १० लाख रुपए होने चाहिए, अगर आपके खाते में आधी राशि नहीं है तो इसके लिए आप बैंक से लोन भी ले सकते हैं।"

लोन मिलने के बाद आपको आवेदन करते समय इसकी डिटेल भी सबमिट करनी होगी और अगर किसी कारणवश आपको लोन नहीं मिलता तो इसकी जानकारी आपको ऑनलाइन आवेदन करते समय देनी होगी।

आपका फॉर्म ऑनलाइन सबमिशन के बाद उत्तराखंड के देहरादून मुख्यालय पर वरिष्ठ अधिकारी उसकी जांच करते हैं कि आपके द्वारा दिए गए सभी आंकड़े सही हैं। अगर आपके द्वारा दिए गए आंकड़े सही हैं तो उसे प्रिंसिपल सहमति दी जाएगी। इसके बाद आपके दस्तावेज बैंक के पास पुन: जांच के लिए जाएंगे, जिसे बैंक वेरीफाई करेगा की आपके द्वारा दी गई जानकारी सही है या नहीं।

इसके बाद आगे डॉ. शर्मा आगे कहते हैं, "वहां बैंक सब चेक करने के बाद आपका आवेदन एक बार फिर हमारे पास आ जाएगा, जो समिति के पास आएगा, वहां से सबमिट होने के बाद पशुपालन व डेयरी मंत्रालय, फिर भारत सरकार के पास जाएगा, इसके बाद आपके आवेदन में जिस बैंक की डिटेल भरी है वो बैंक सीधे लाभार्थी के खाते में ५०% राशि भेज देगा।

हरियाणा से गोपालकों के लिए एक अच्छी खबर आ रही है।

हरियाणा सरकार ने एक देसी गाय खरीदने पर किसान को 25000 रुपए की सब्सिडी देने की घोषणा की है।

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए सबसे बड़ा फैसला लिया गया है। हरियाणा सरकार के मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर ने एक देसी गाय की खरीद पर किसान को 25 हजार रुपए देने का फैसला लिया है। साथ ही किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए जीवामृत का घोल तैयार करने के लिए चार बड़े ड्रम नि:शुल्क दिए जाएंगे। हरियाणा राज्य इस तरह की घोषणा करने वाला देश का पहला राज्य बन गया है।

पीएम की मुहिम को सफल बनाने का प्रयास

हरियाणा सरकार द्वारा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की नेचुरल फार्मिंग वाली मुहिम को सफल बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इससे जहरीले केमिकल वाली खेती पर अंकुश लग सके।

५० हजार एकड़ भूमि में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने का लक्ष्य

मनोहरलाल खट्टर सरकार ने प्रदेश की 50 हजार एकड़ भूमि में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखा गया है। इस योजना के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए प्रत्येक ब्लॉक में 'खेत प्रदर्शनी' कार्यक्रम लगाए जाएंगे, जिससे दूसरे किसान भी जहरीली खेती करने से तौबा करें और जैविक खेती की ओर रुख करें। प्राकृतिक खेती से किसानों की आमदनी में इजाफा होगा और लोगों का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा।

इस तरह किया गया है एलान

हरियाणा के करनाल स्थित डॉ. मंगलसैन ऑडिटोरियम में प्राकृतिक खेती पर राज्यस्तरीय समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने कहा कि पोर्टल पर रजिस्टर्ड 2 से 5 एकड़ भूमि वाले किसानों को स्वेच्छा से प्राकृतिक खेती अपनाने की अपील की गई है। ऐसे सभी किसानों को देसी गाय खरीदने के लिए 50 प्रतिशत सब्सिडी देने का प्रावधान तय किया गया है। सीएम ने कृषि वैज्ञानिकों से सीधा संवाद किया और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को जागरूक करने की बात कही। और जिम्मेदार अधिकारियों को इस संबंध में आवश्यक निर्देश भी दिए।

किसानों को खेती में ड्रोन का उपयोग करने पर मिलेगा फायदा, जानें कैसे

ड्रोन खरीदने पर ५ लाख रुपए देगी मोदी सरकार

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत की जनसंख्या का एक बहुत बड़ा हिस्सा उसी पर निर्भर है। इसी को देखते हुए भारत सरकार कृषकों के लिए बहुत सारी योजनाएं ला रही है जिससे किसानों को उनके खेती के कार्यों में अधिक से अधिक सुविधा प्राप्त हो सके और लागत घटने के साथ—साथ किसानों की आय भी बढ़े।

ड्रोन खरीदने वाले विभिन्न वर्गों के लोगों को छूट

ऐसी एक योजना भारत सरकार ने ड्रोन खरीदने पर लागू की है इस योजना के तहत ड्रोन खरीदने वाले विभिन्न वर्गों के लोगों को छूट भी प्रदान की गई है। इस योजना में किसानों, महिलाओं, अनुसूचित जाति—अनुसूचित जनजाति आदि को ड्रोन खरीदने के लिए 5 लाख तक की सब्सिडी का प्रावधान रखा गया है। वहीं अन्य किसानों को 40% अर्थात 4 लाख रुपए तक की सहायता प्रदान की जाती है।

हमारे देश के किसानों को खेती के दौरान काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसी ही समस्यों को दूर करने के लिए केंद्र सरकार द्वारा इस योजना को चलाया गया है। ताकि किसानों को खेती के कार्यों में कोई परेशानी न हो और वे खेती के कामों को अच्छे ढंग से कर सकें। इसी को देखते हुए भारत सरकार द्वारा ड्रोन के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है और ड्रोन के खरीद पर 50% की सब्सिडी भी दी जा रही है। साथ ही व्यक्तिगत तौर पर ड्रोन खरीदने के लिए भी आर्थिक मदद देने का प्रावधान है। भारत के कृषि मंत्री नरेंद्र तोमर जी कहते हैं कि इस योजना से भारत के किसानों को बहुत फायदा मिलेगा। किसानों की लागत घटेगी वह आय में वृद्धि होगी।

कृषि क्षेत्र में क्या काम करेगा ड्रोन

कृषि के क्षेत्र में ड्रोन ;हतपबनसजनतम क्तवदमद्ध की अहम भूमिका है। ड्रोन के जरिए खेतों में कीटनाशकों का छिड़काव बहुत ही कम समय में हो सकेगा जिससे समय और मजदूरी की बचत होगी। ड्रोन के माध्यम से किसान की कई प्रकार से सहायता होगी एक तो किसान के समय की बचत होगी और दूसरा कि खेतों में कीटनाशकों का छिड़काव समान रूप से हो सकेगा और अगर हम पा. रंपरिक रूप से खेतों में कीटनाशकों का छिड़काव कराएं तो पूरे खेत पर कीटनाशकों का छिड़काव एक समान नहीं हो पाता।

ड्रोन से बचत की सम्भावना

यदि हम छिड़काव के लिए मजदूरों को लगाएं तो दो—तीन मजदूर आराम से लग जाएंगे और अगर प्रत्येक मजदूर का रुपए 500 भी जोड़ें तो लगभग 15 सौ रुपए कीटनाशक के छिड़काव में खर्च होते हैं। और वही अगर हम ड्रोन के माध्यम से कीटनाशकों का छिड़काव करवाएं तो हमें महज 1 एकड़ में रुपए 400 का खर्च आएगा।

साथ ही अगर पानी की बात की जाए 1 एकड़ में हमें 150 से 200 लीटर पानी की आवश्यकता होती है और वही अगर यह काम ड्रोन से कराया जाए तो हमें केवल 10 लीटर पानी की आवश्यकता होती है इससे हमारे पानी की भी बचत होगी।

ड्रोन खरीद की खास बात

1. ड्रोन के माध्यम से कृषि सर्विस देने वाले किसान सह. कारी समिति व ग्रामीण उद्यमियों को कस्टम हायरिंग केंद्रों द्वारा ड्रोन खरीद के लिए 40 फीसदी की दर से या रुपए 400000 तक की सब्सिडी दी जाएगी।
2. भारत के अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति किसानों महिलाओं आदि को ड्रोन खरीदी पर 50 फीसदी या रुपए 500000 तक की छूट का प्रावधान है।
3. खेती में ड्रोन के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए SMAM योजना के तहत ढूंढ खरीद पर 100 फीसदी तक की छूट का प्रावधान रखा गया है।
4. इसके अलावा कृषि उत्पादक संगठनों को ड्रोन खरीदने पर 75 फीसदी तक की आर्थिक सहायता दी जाती है।

ड्रोन से काबू हुए थे टिड्डी दल

केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी ने कहा कि यह तकनीक भारत के अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है जिससे उन्हें खेती के कार्य में सुविधा होगी वह लागत में कमी आएगी और उनकी आय बढ़ेगी। ड्रोन के माध्यम से टिड्डी दलों को काबू करना आसान हो जाएगा।

कृषि सचिव मनोज अहूजा ने कहा कि ड्रोन को किसानों के पास ले जाने के लिए अनुकूल परिस्थितियां हैं और सरकार भी इस संबंध में प्रतिबद्ध है।

क्रांतिकारी ट्रैक्टर रू मात्र 15 रुपए में यह ट्रैक्टर करता है एक घंटा काम

इंसान का तेज दिमाग और कड़ी मेहनत कठिन से कठिन काम को भी आसान कर सकती है। अन्नदाता दिनरात मेहनत मजदूरी करते हैं। और हर रोज नए नए प्रयोग करते हैं। आज हम आपको एक ऐसे किसान की दास्तां से रूबरू कराएंगे जिसने एक ऐसा क्रांतिकारी ट्रैक्टर बना डाला, जो महज 15 रुपए में एक घंटा काम करता है।

गुजरात के जामनगर निवासी महेश भूत ने ऐसा कमाल का ट्रैक्टर बनाकर लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। 34 वर्षीय महेश बचपन से ही अपने पिता के साथ खेती—किसानी में हाथ बटाते रहे हैं। साल 2014 में अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद महेश ने खेती—किसानी को ही पहली वरीयता दी। महेश ने पेस्टीसाईट्स और फर्टिलाइजर के उपयोग से होने वाले खर्च को कम करने के लिए अपनी पूरी क्षमता के साथ ऑर्गेनिक खेती का फैसला लिया। इसी सोच के तहत काम करते हुए महेश ने एक दिन कृषि यंत्रों का खर्चा कम करने के उद्देश्य से ई—ट्रैक्टर बनाने का निर्णय लिया।

महेश ने सबसे पहले ई—रिक्शा बनाने का प्रयोग किया और कुछ ही दिनों में महेश ने ई—ट्रैक्टर भी बना लिया। इस ट्रैक्टर में 22 एचपी का इंजन और 72 वाट लीथियम की अच्छी क्वालिटी की बैटरी लगी है, जो जल्दी खराब नहीं होती है। महेश ने अपने ई—ट्रैक्टर का नाम व्योम रखा। व्योम ट्रैक्टर से एक घंटा खेत में काम करने पर महज 15 रुपए का खर्चा आता है। आज इस ई—ट्रैक्टर व्योम (टलवउ म्समबजतपब ज्तंबजवत) ने दुनियां के कई देशों में खास जगह बना ली है।

२१ नए ट्रैक्टर बनाने का मिल चुका है ऑर्डर

किसान द्वारा बनाया गया ट्रैक्टर व्योम लगातार सुर्खियों में बना हुआ है। मिली जानकारी के अनुसार व्योम नाम के ई—ट्रैक्टर को बनाने के लिए 21 लोगों ने ऑर्डर किया है, जो जनवरी 2023 तक तैयार होने की संभावना है।

क्या है व्योम ई—ट्रैक्टर की कीमत?

गुजरात के महेश भूत द्वारा बनाए जा रहे ई—ट्रैक्टर की कीमत सामान्य ट्रैक्टर के मुकाबले थोड़ी ज्यादा है। ई—ट्रैक्टर की कीमत करीब 5 से 6 लाख रुपए तय की गई है, जो सामान्य ट्रैक्टर के मुकाबले थोड़ी अधिक है।

व्योम ई—ट्रैक्टर की विशेषताएं

1— यह ई—ट्रैक्टर एक बार चार्ज होने के बाद करीब 9 से 10 घंटे काम कर सकता है।

2— इसमें अच्छी क्वालिटी की 22 HP व 72 वाट की बैटरी लगी है, जो बार—बार बदलनी नहीं पड़ती है।

3—इस ई—ट्रैक्टर को मोबाइल एप से जोड़ा गया है। इससे ई—ट्रैक्टर के सभी पार्ट एवं अन्य सभी जानकारियां मिल सकती हैं।

4— इस ई—ट्रैक्टर को आधुनिक तकनीकी से तैयार किया गया है, जिससे किसानों को कोई परेशानी न हो। इसकी रिपेयरिंग करना भी बेहद आसान है।

5— इस ई—ट्रैक्टर में चार गियर के साथ एक रिवर्स गियर भी होता है।

अब सरकार बागवानी फसलों के लिए देगी 50% तक की सब्सिडी, जानिए संपूर्ण ब्यौरा

देश की बढ़ती जनसंख्या और शहरीकरण के कारण बागवानी फसलों अर्थात फलों और सब्जियों की मांग में तेजी से वृद्धि हुई है। जिसके फलस्वरूप किसानों का ध्यान बागवानी फसलों के उत्पादन की ओर ज़्यादा हो गया है। किसान इनके उत्पादन में रुचि भी ले रहे हैं।

जिसके चलते केंद्र सरकार एसे किसानों की मदद करने, किसानों की आय बढ़ाने और बागवानी उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए अनेक प्रकार की योजनाएं चला रही है। इसी बीच बिहार सरकार द्वारा बागवानी फसल उत्पादन करने वाले किसानों के लिए एक योजना चलाई गई है। जिसके अंतर्गत किसानों को बागवानी उत्पादन के लिए सब्सिडी की व्यवस्था की गई है।

बिहार बागवानी विभाग ने विभिन्न प्रकार के फलों और सब्जियों के उत्पादन में 50% की सब्सिडी एवं पपीता की खेती करने वाले किसानों को उत्पादन लागत का सिर्फ 25% खर्च करना होगा। मतलब किसानों को पपीता खेती पर 75% तक की मदद दी जा रही है।

बागवानी फसलें जिन पर सब्सिडी का प्रावधान

इस योजना के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की बागवानी फसलों में सब्सिडी का प्रावधान है जैसे पपीता की खेती करने में कृषक को 75% तक की सब्सिडी दी जाती है। इसके साथ ही कुछ अन्य फसलें जैसे आंवला, जामुन, कटहल, अनानास, आम, लीची, अमरूद आडियानेक प्रकार की बागवानी करने वाले किसानों के लिए 50% की सब्सिडी का प्रावधान है।

NEW HOLLAND
AGRICULTURE

इस योजना का लाभ उठाने के लिए निम्न नियमों का पालन करना होगा

इस योजना में किसान को 50% लगभग 62 हजार रुपए सब्सिडी के तौर पर दी जाती है। जिसके कारण बिहार बागवानी विभाग इस योजना का लाभ कुछ नियमों के अंतर्गत दे रही है। जैसे जो भी किसान स्ट्रॉबेरी की खेती करना चाहते हैं उन्हें 1 एकड़ में 2500 स्ट्रॉबेरी पौधे लगाने होंगे और शर्त यह है कि उन्हें 2 मीटर की दूरी पर स्ट्रॉबेरी का पौधा लगाना होगा। इसके लिए विभाग द्वारा 1.25 लाख रुपए की लागत रखी गई है जिसका 50% रुपए सरकार किसान को सब्सिडी के तौर पर देगी।

अगर किसान इन नियमों का पालन करते हैं तो वे इस योजना का लाभ उठाने के लिए आवेदन कर सकते हैं। इसके बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए बिहार बागवानी विभाग में संपर्क कर सकते हैं।

इस योजना में आवेदन करने की आखिरी तिथि 7 जुलाई रखी गई है। अर्थात जो किसान इस योजना का लाभ उठाना चाहते हैं वे इस योजना में 7 जुलाई तक आवेदन कर सकते हैं। लेकिन इसके पूर्व जो शर्तें इस योजना के अंतर्गत रखी गई है वह पूरी होना आवश्यक है इसके लिए किसानों का नियमानुसार खेत तैयार होना चाहिए।

इस योजना में ऑनलाइन आवेदन करने के लिए बिहार सरकार ने ऑनलाइन आवेदन मांगे हैं जिसके लिए उनके द्वारा एक लिंक तैयार की गई है।

horticulture-bihar-gov-in पर जाकर आप इस योजना के लिए आवेदन कर सकते हैं।

घर की बालकनी को गुलाब के फूलों से महकाने का आसान तरीका

हर कोई अपने आशियाने को सुंदर और खूबसूरत बनाना चाहता है। घर के आस–पास के वातावरण को भी अच्छा रखना हर किसी की इच्छा रहती है।

बालकनी में लगे पौधे न सिर्फ आपके घर को स्वच्छ बनाने का काम करते हैं बल्कि पूरे घर को ब्यूटीफुल भी बनाते हैं। इसलिए कई लोग आउटडोर प्लांट के अलावा इंडोर प्लांट भी लगाते हैं। अपने घर के अंदर लोगज्यादा फ्लावर प्लांट जैसे दृ चमेली, रोज प्लांट आदि लगाना पसंद करते हैं।

1. अच्छी नर्सरी से गुलाब के पौधे का चयन

बालकनी में गुलाब के पौधा लगाने के लिए किसी अच्छी नर्सरी से ही पौधा लें। अच्छी नर्सरी से मिलने वाले पौधे जन्म से ही स्वस्थ होते हैं। इनमें कोई रोग नहीं होता है और रोगों से लड़ने की क्षमता भी अधिक होती है।

2. गमले में उपयोगी मिट्टी पर विशेष ध्यान दें

पौधों के लिए मिट्टी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। इसलिए आपकी बालकनी के गमले में उपयोगी मिट्टी ही होनी चाहिए। इस पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। क्योंकि गुणवत्तापूर्ण मिट्टी से पौधे के विकास अच्छा होता है।

3. इस तकनीकी से लगाएं पौधे

बालकनी में गुलाब का पौधा लगाने के लिए मिट्टी के बने हुए गमले खरीद लें। उसमें उचित मात्रा में उपयोगी मिट्टी डालें। पौधे को गमले में ठीक से लगाकर पानी डालें। फिर समय–समय पर पौधे की देखभाल करें। और बीच–बीच में कीट–पतंगों से भी बचाकर रखें। इसके लिए पौधे पर कीटनाशक छिड़काव भी करें। पौधे में पोषक तत्वों का छिड़काव भी आवश्यकता करते रहें। पौधे की वृद्धि का भी ख्याल रखें।

4. गुलाब के पौधे के लिए ठंडा मौसम है अच्छा

गुलाब के पौधे के लिए ठंडा मौसम काफी प्रतिकूल रहता है। अत्यधिक धूप और गर्मी से गुलाब के पौधे को नुकसान की आशंका रहती है। इसीलिए बालकनी में मौसम को देखते हुए गुलाब के गमले को रखें।

5. घर में गुलाब के फूल से फायदे

- गुलाब के फूल के पौधे सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाते हैं। इन पौधों को घर की उत्तर या पूर्व दिशा में लगाना चाहिए।
- घर में पेड़–पौधे लगाने से वातावरण में ठंडक बनी रहती है। ये पर्यावरण के लिए भी बहुत फायदेमंद है।
- गुलाब के फूल की खुशबू (महक) से घर का वातावरण भी शुद्ध रहता है।
- गुलाब के फूल की पत्तियों को खाने के उपयोग में लिया जा सकता है।
- गुलाब के साथ–साथ अन्य फूलों से भी बालकनी की रौनक बढ़ती है।

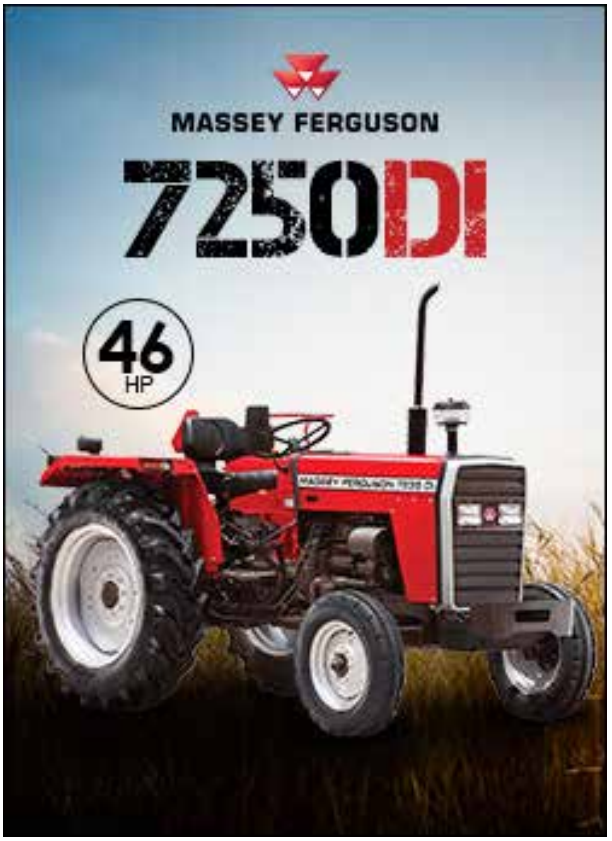

खुबानी (रेड बोलेरो एप्रिकॉट)

खुबानी एक गुठलीदार फल है। उत्तर भारत और पाकिस्तान में यह बहुत ही महत्वपूर्ण फल समझा जाता है। खुबानियों में कई प्रकार के विटामिन और फाइबर होते हैं। खुबानी इम्युनिटी बढ़ाने ¼Immunity Booster½ में सहायक होती है और इसे सुखाकर भी खाया जाता है।

क्या है खुबानी?

खुबानी एक गुठलीदार फल होता है, जिसे इंग्लिश में " ऐप्रिकॉट" (चतपबवज) कहते हैं और फारसी में इसको "जर्द आलू" कहते हैंद्य यह एक छोटे आड़ू के बराबर होता हैद्य विशेषज्ञों के अनुसार यह भारत में पिछले 5 हजार साल से उगाया जा रहा हैद्य खुबानी के पेड़ की अगर बात की जाये तो यह कद में छोटा होता हैद्य इसकी लम्बाई 7 से 12 मीटर के बीच होती हैद्य वैसे तो खुबानी के बहरी छिलका काफी मुलायम होता है, लेकिन उस पर कभी—कभी बहुत महीन बाल भी हो सकते हैं। खुबानी का बीज फल के बीच में एक खाकी या काली रंग की सख्त गुठली में बंद होता है। यह गुठली छूने में खुरदुरी होती है। इसमें आयरन, पोटेशियम और मैग्नीशियम के अलावा एंटीऑक्सीडेंट्स, वीटा कैरोटीन, विटामिन सी और ई भी पाया जाता है।

खुबानी के बीज

खुबानी की गुठली के अन्दर का बीज एक छोटे बादाम की तरह होता है और खुबानी की बहुत सारी किस्मों में इसका स्वाद एक मीठे बादाम सा होता है।

इसे खाया जा सकता है, लेकिन इसमें हलकी मात्रा में एक हैड्रोसायनिक ऐसिड नाम का जहरीला पदार्थ होता है। बच्चों को खुबानी का बीज नहीं खिलाना चाहिए। बड़ों के लिए यह ठीक है लेकिन उन्हें भी एक बार में 5.10 बीजों से अधिक नहीं खाने चाहिए।

खुबानी के प्रयोग

सूखी खुबानी को भारत के पहाड़ी इलाकों में बादाम, अखरोट और न्योजे की तरह खुबानी को एक खुश्क मेवा समझा जाता है और काफी मात्रा में खाया जाता है। कश्मीर और हिमाचल के कई इलाकों में सूखी खुबानी को किश्त या किष्ट कहते हैं। कश्मीर के किश्तवार क्षेत्र का नाम इसी. लिए पड़ा क्योंकि प्राचीनकाल में यह जगह सूखी खुबनियों के लिए प्रसिद्ध थी।

खुबानी(रेड बोलेरो एप्रिकॉट) कैंसर से लड़ने में सहायक हैं।

खुबानी में कई तरह के विटामिन्स जैसे विटामिन ए, सी, ई, पोटाशियम, मैंगनीज, मैग्निशियम, नियासिन आदि पौष्टिक तत्त्व मौजूद हैं।

खुबानी में फाइबर की अच्छी मात्रा होती है जिससे पाचन क्रिया दुरुस्त होती है और कब्ज की शिकायत नहीं रहती। यह वजन कम करने में भी इसलिए सहायक है।

खुबानी से बहुत से रोगों में आराम होता है, जैसे दस्त या अतिसार, बार—बार प्यास लगने की समस्या, अल्सर, गठिया के दर्द, रूखी त्वचा, पीले ज्वर आदि कई समस्याओं में यह कारगर सिद्ध हुआ है। वैसे किसी भी इलाज के लिए खुबानी का उपयोग करने से पहले आयुर्वेदिक चिकित्सक या जानकार की सलाह जरूर लें।

खुबानी की खेती के लिए उचित मिट्टी और जलवायु

खुबानी की खेती के लिए उचित जल निकासी वाली उपज. ऊ बलुई दोमट मिट्टी (भूमि का P.H. मान 7) की जरूरत होती है द्य जल ठहराव वाली भूमि या कठोर भूमि खुबानी की खेती के लिए बिलकुल उपयुक्त नहीं है द्य

ऐसे क्षेत्र जहां गर्म जलवायु वर्ष में अधिक समय तक व्याप्त हो, वहां फलन क्रिया बिगड़ जाती है द्य सामान्य वर्षा और सर्दी का मौसम खुबानी के पौधों के लिए उचित होता है द्य हालाँकि फूल जब लगते हैं उस समय अधिक ठंड या पाला से फलन को नुकसान होता है।

खुबानी के पौधों को रोपने का कार्य जुलाई से अगस्त के महीने तक कर सकते है क्यूंकि वर्षा ऋतू में पौधों का विकास सही तरीके से हो जाता है। सिंचाई की उचित संसाधन हो तो मार्च में भी लगाए जा सकते हैं।

पौधों की सिंचाई

गर्मी के दिनों में पौधों को हफ्ते दस दिन के अंतराल में पानी देना होता है। ठण्ड के दिनों में तीन हफ्ते के अंतराल में पौधों को पानी दे। वैसे खुबानी के पौधों के लिए ड्रिप विधि का इस्तेमाल कर सिंचाई करना उचित माना जाता है।

खुबानी के फलों की तुड़ाई

खुबानी के पौधों में तीन से चार वर्षों में पैदावार आरम्भ हो जाता है। कुछ किस्मों में अप्रैल के माह से इसके पौधों पर फलन की शुरुआत होती है और कुछ किस्में जून से जुलाई तक फलती हैं।

खुबानी की उपज से आय

खुबानी के पेड़ पचास से साठ वर्षों तक उपज देते हैं। इसकी अलग अलग किस्में, जैसे कम समय में पैदावार देने वाली चारमग्ज खुबानी 80 किलोग्राम से लेकर अनानास खुबानी की प्रजाति 120 किलोग्राम का उत्पादन प्रति वर्ष देती हैं। अगर बाजार भाव खुबानी का सवा सौ रूपए प्रति किलो लेके चलें, तो किसान भाई एक हेक्टेयर के खेत में खुबानी के पौधों से, एक बार की फसल से पंद्रह लाख तक की कमाई कर सकते है।

आम की बागवानी

आम का नाम सुनते ही मुंह में पानी आना शुरू हो जाता है। साल भर आम का इंतजार लोग काफी बेसब्री से करते हैं। लोग आम का इस्तेमाल जूस, जैम, कचरी, आच. ार विभिन्न विभिन्न तरह की डिशेस बनाने में आम का इस्तेमाल करते हैं।आम भाषा में कहें तो आम के एक नहीं बहुत सारे फायदे हैं। यहां तक की कुछ दवाइयां ऐसी भी हैं। जिनमें आम का इस्तेमाल किया जाता है।

आम की फसल के लिए भूमि एव जलवायु

आम की फसल किसानों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। इसलिए इसकी जलवायु और भूमि का खास ख्याल रखना चाहिए। आम की फसल के लिए भूमि एवं जलवायु का चयन किस प्रकार करते हैं जानिए :

आम के फसल की खेती दो तरह की जलवायु में की जाती है पहली समशीतोष्ण एवं उष्ण जलवायु, आम की खेती के लिए यह दोनों जलवायु बहुत ही ज्यादा महत्वपूर्ण होती हैं।

कृषि विशेषज्ञों के अनुसार आम के फसल की अच्छी प्राप्ति करने के लिए इस का तापमान लगभग 23.8 से 26.6 डिग्री सेंटीग्रेट सबसे अच्छा तापमान होता हैं। आम की खेती किसी भी तरह की भूमि यानी जमीन में की जा सकती है। लेकिन ध्यान रखें कि आम की खेती के लिए जलभराव वाली भूमि ,पथरीली भूमि तथा बलुई वाली भूमि आम की फसल उगाने के लिए अच्छी नहीं होती होती। आम की फसल के लिए सबसे अच्छी दोमट भूमि होती है और इन में जल निकास काफी अच्छी तरह से हो जाता है।

आम की प्रजातियां

आम की एक नहीं बल्कि विभिन्न विभिन्न प्रकार की प्रजातियां मौजूद है। यह प्रजातियां कहीं और नहीं हमारे देश में उगाई जाती हैं।और इनका स्वाद भी अलग अलग होता है। आम की प्रजातियां कुछ इस प्रकार है जैसे लंगड़ा आम, दशहरी आम, चौसा आम, बाम्बे ग्रीन, अलफांसी, तोताप. री आम ,हिमसागर आम, नीलम, वनराज ,सुवर्णरेखा आदि आम की प्रजातियां है। इन प्रजातियों की जानकारी हमें कृषि विशेषज्ञों द्वारा दी गई है। कृषि विशेषज्ञों के अनुसार आम की कुछ और भी नई प्रजातियां उगाई जा रही हैं। जो इस प्रकार हैं जैसेरू आम्रपाली, दशहरी 51, दशहरी 5 ,मल्लि. का, अंबिका, राजीव ,गौरव, रामकेला और रत्ना आदि आम की नई प्रजातियों में शामिल हैं।

खाद एवं उर्वरक का इस्तेमाल

आम के पेड़ों के चारों तरफ जुलाई के महीनों में, नलिका बनाई जाती है और उन नलिका में 100 ग्राम प्रति नाइट्रोजन, पोटाश और फास्फोरस की मात्रा इन नलिका मे दी जाती है। मृदा अवस्था सुधार के अंतर्गत भौतिक और रासायनिक में परिवर्तन लाने के लिए 25 से लगभग 30 किलोग्राम गोबर की सड़ी हुई खादों का इस्तेमाल किया जाता है। पौधों में सड़ी हुई खाद देना बहुत ही ज्यादा उपयोगी होता है। किसान जुलाई और अगस्त के महीने में जैविक खाद का इस्तेमाल करते हैं।

इन खादो का इस्तेमाल 25 ग्राम एजीसपाइरिलम और 40 किलोग्राम गोबर की खाद के साथ अच्छी तरह से मिक्स करने के बाद खेतों में डालने से आम की उत्पादकता काफी अच्छी होती है।

आम की फसल की सिंचाई

आम की फसल के लिए सिंचाई किस प्रकार करते है? जब किसान बीज रोपण कर लेते हैं तो लगभग प्रथम सिंचाई 2 से 3 दिन के भीतर भूमि की आवश्यकता अनुसार कर लेनी चाहिए।

खेतों में आम के छोटे–छोटे फूल आने शुरू हो जाए तो दो से तीन बार सिंचाई कर लेनी चाहिए। किसान खेतों में पहली सिंचाई पेड़ लगाते समय तथा दूसरी सिंचाई आम की कली जब अपना गोलाकार धारण कर ले तब की जाती है। तीसरी सिंचाई कली पूरी तरह से खेतों में फैल जाए तब करनी चाहिए। सिंचाई नालियों द्वारा ही करनी चाहिए क्योंकि इस क्रिया द्वारा पानी की बचत होती है किसी भी तरह का जल व्यर्थ नहीं होता हैं। इसीलिए सिंचाई की यह क्रिया बहुत ही महत्वपूर्ण है।

आम की फसल में निराईगुड़ाई और खरपतवारों की रोकथाम

आम की फसल के लिए खेतों में निराई गुड़ाई करना आवश्यक होता है क्योंकि निराईगुड़ाई के द्वारा खेत साफ–सुथरे रहते हैं। आम की अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए खेतों में साल में दो बार अच्छी गहरी जुताई करते रहना चाहिए। क्योंकि इस प्रकार जुताई करने से किसी भी तरह का खरपतवार और भूमि कीट नहीं लगते हैं। भूमि में लगने वाले कीटनाशक कीट आदि भी नष्ट हो जाते हैं। खेतों में घास का नियंत्रण बनाए रखना आवश्यक होता है जिससे कि समय–समय पर खेतों में घास निकलती रहे।

आम की फसल से होने वाले फायदे

किसानों के लिए आम की फसल बहुत ही आवश्यक होती है, क्योंकि इसमें ज्यादा सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती हैं कम सिंचाई पर ही या काफी भारी मात्रा में उत्पादन करते हैं। इसीलिए किसानों के लिए आम की फसल लाभदायक फसलों में से एक है। किसानों के लिए यह बहुत बड़ा फायदा है आम की बागवानी करने का क्योंकि इसमें ज्यादा जल की जरूरत नहीं पड़ती है। आम की खेती शुष्क भूमि पर की जा सकती है। आम के साथ ही साथ इसके पत्ते, लकड़ियां आदि भी बहुत ही उपयोगी होते हैं। हिंदू धर्म में आम के पत्तो द्वारा पूजा पाठ किया जाती हैं। इसीलिए यह कहना उचित होगा कि आम का पूरा भाग बहुत ही ज्यादा उपयोगी होता है।

मार्किट में उचित दाम पर आम बेचकर किसान अच्छा आय निर्यात कर लेते हैं। आम की फसल आय निर्यात का सबसे महत्वपूर्ण और अच्छा साधन होता है किसानों के हित में, आम की फसल में किसी भी तरह की कोई लागत नहीं लगती है और ना ही किसी तरह का कोई नुकसान होता है।

आम की विशेषताएं

आम के फल में विटामिन ए की मात्रा होती हैं। सभी फलों के मुकाबले आम में विटामिन ए की भरपूर मात्रा पाई जाती है। ना सिर्फ विटामिन ए, बल्कि आम में और भी तरह के आवश्यक और महत्वपूर्ण विटामिंस मौजूद होते हैं जैसे रू इसमें आपको विटामिन बी, विटामिन सी और विटामिन ई, की मात्रा प्राप्त भी होती है। विटामिंस के साथ ही साथ आम में आयरन तथा पोटैशियम, मैग्नीशियम और कॉपर जैसे आवश्यक तत्व भी मौजूद होते हैं।

हापुस आम की पूरी जानकारी

हापुस आम को अलफांसो के नाम से भी जाना जाता है। हापुस आम की मिठास बहुत ही ज्यादा समृद्ध होती है और यह खाने में बहुत ही ज्यादा स्वादिष्ट लगता है। अपने स्वादिष्ट स्वाद के चलते हापुस आम अंतरराष्ट्रीय बाजारों और मार्केट तथा दुकानों में अपनी अलग जगह बनाए हुए हैं। हापुस आम भारत में सबसे महंगा तथा अच्छे दाम पर बिकने वाली आम की पहली किस्म है। हापुस आम दिखने में केसरिया रंग का होता है। हापुस आम की किस्मों का उत्पादन महाराष्ट्र जिले के रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग एवं देवगढ़ और रायगढ़ जैसे जिलों में हापुस आम की फसल उगाई जाती है। हापुस आम की फसल से किसान आय निर्यात का अच्छा साधन स्थापित कर लेते हैं। हापुस आम की फसल किसानों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होती है।

हापुस आम का वजन

बात करे यदि हापुस आम के वजन की तो इनका वजन करीब 150 ग्राम से शुरू होकर 300 ग्राम तक का होता है। या फिर उससे अधिक भी हो सकता है हापुस आम वजन में काफी अच्छे होते हैं। हापुस आम अपनी मिठास , स्वादिष्ट स्वाद, बेहतरीन खुशबू के लिए तो प्रसिद्ध ही हैं। परंतु हापुस आम में एक और बड़ी खूबी यह भी है। कि पूरी तरह से पक जाने के एक हफ्ते बाद तक रखने पर या खराब नहीं होते हैं। हापुस आम अपने इस बेहतरीन और खास गुण के चलते मार्केट में महंगे दाम पर बिकता है। हापुस आम दर्जन और किलोग्राम दोनों ही तरह से मार्केट में भारी कीमत पर बिकते हैं। प्राप्त की गई जानकारियों के अनुसार हापुस आम की कीमत 2021 में लगभग थोक बाजारों में रुपए 700 दर्जन के हिसाब से थी। हापुस आम अपने भारी वजन के चलते दाम में बढ़कर मिलते हैं।

विदेश में हापुस आम की बढ़ती मांग

हापुस आम को ना सिर्फ भारत में अन्यथा विदेश में भी खूब पसंद किया जाता है और इसकी खूबी और पसंद के चलते करीब हर साल यह पांच 50000 टन के हिसाब से विदेशों में खाए जाते हैं।आंकड़ों के मुताबिक यह कहना उचित होगा। कि हापुस आम ना सिर्फ भारत अन्यथा विदेश देशों में भी अपनी लोकप्रियता को बढ़ा रहा है। हापुस आम अप्रैल से लेकर मई के महीने तक पककर पूरी तरह से तैयार हो जाते हैं और यह करीब जून—जुलाई के बीच बाजार में आना शुरू हो जाते हैं। किसानों से प्राप्त की गई जानकारी के अनुसार हापुस आम महाराष्ट्र के कोंकण इलाके में सिंधुगण जिले के देवगढ़ तहसील के कम से कम 70 गांवों में 45000 एकड़ की भूमि पर हापुस आम को उगाने का कार्य किया जाता है। यह मार्ग लगभग देवगढ़ समुद्र तट से लगभग 200 किलोमीटर अंदर जाकर पड़ता है। इन जिलों में पैदा होने वाले हापुस आम सबसे बेहतरीन किस्म के होते हैं जिनका कोई और तोड़ नहीं होता है।

हापुस आम की पैदावार करने वाले प्रदेश

हापुस आम की पैदावार महाराष्ट्र प्रदेश के गुजरात के वलसाड़ तथा नवसारी में, रत्नागिरी में हापुस आम की भारी मात्रा में पैदावार होती है। आय की दृष्टि से देखें तो हर साल लगभग 200 करोड़ रुपए का हापुस आम से निर्यात होता है। कुछ ऐसे प्रदेश है जहां से हापुस आम का निर्यात होता है जैसेय दुबई सिंगापुर मध्य एशिया इन देशों से भी हापुस आम के जरिए अच्छा निर्यात किया जाता है। विदेशों से लगभग हापुस आम की खपत साल के हिसाब से लगभग 50000 टन से भी ज्यादा अधिाक होती है। हापुस आम का जाना माना और मुख्य कारोबार का क्षेत्र नई मुंबई का वाशी स्थित कृषि उत्पादन बाजार है। हापुस आम का उत्पादन कृषि उत्पादन बाजार समिति द्वारा होता है।

हापुस आम की पहचान

हापुस आम की पहचान, हापुस आम की सुगंध से की जाती है। यह सुगंध में बहुत ही अच्छे होते हैं। जिसके चलते हैं आप हापुस आम की पहचान कर सकते हैं। हापुस आम की पहचान इसके पल्प केस. री रंग और बिना रेशेदार होने से भी की जा सकती है। यह कुछ विशेषताएं थी जिसके चलते आप हापुस आम आपकी पहचान कर सकते हैं।

हापुस आम की विशेषताएं

हापुस आम ना सिर्फ खाने में स्वादिष्ट, बल्कि इसमें विभिन्न प्रकार के औषधि गुण मौजूद होते हैं जो स्वास्थ्य के लिए बहुत ही ज्यादा लाभदायक होते हैं। हापुस आम में पूर्ण रूप से आयरन मौजूद होता है। यदि गर्भवती महिला इसे सेवन करती है तो उसके स्वास्थ्य के लिए यह बहुत लाभदायक होते हैं। हापुस आम में उच्च मात्रा में फेनोलिक यौगिक पाया जाता है जो एंटी—ऑक्सीडेंट होते हैं। जो कैंसर जैसी भयानक बीमारियों से लड़ने में सहायता करते हैं।

दोस्तों हम उम्मीद करते हैं कि आपको हमारा हापुस आम वाला आर्टिकल पसंद आया होगा। इसमें हापुस आम से जुड़ी सभी प्रकार की जानकारियां मौजूद है। हमारी दी गई जानकारियों से यदि आप संतुष्ट है तो हमारी इस पोस्ट को ज्यादा से ज्यादा सोशल मीडिया पर और अपने दोस्तों के साथ शेयर करते रहें।

दशहरी आम की विशेषताएं

दशहरी आम, आम की उन किस्मो में से एक है जो अपनी भीनी भीनी— सोंधी सोंधी खुशबू तथा मीठे स्वाद के लिए जाना जाता है। दशहरी आम को ना सिर्फ भारत में अपितु इसे विदेशों में भी खूब पसंद किया जाता है। विदेशों में यह दशहरी आम बहुत ही ज्यादा मशहूर है अपने बेहतरीन स्वाद के चलते, कहा जाता है कि दक्षिण भारत में दशहरी आम को दसहरी नाम भी दिया गया है। उत्तर प्रदेश में दशहरी आम को बहुत ज्यादा पसंद किया जाता है। क्या आपने कभी सोचा है कि इसे दशहरी नाम क्यों दिया गया है? क्योंकि दशहरी आम प्रजाति की उत्पत्ति लखनऊ क्षेत्र के पास दशहरी के गांव से हुई थी। इस वजह से इन्हें दशहरी नाम दिया गया है।

Subscribe to our
YouTube Channel

दशहरी आम का बीज रोपण

दशहरी आम का रोपण करने के लिए किसान सबसे पहले अच्छी भूमि का चयन करते हैं। जिन क्षेत्रों में ज्यादा वर्षा होती है, उन क्षेत्रों में वर्षा के अंत के महीने में आम का बाग रोपण करना चाहिए। बीज रोपण करने के लिए भूमि को अच्छी तरह से गड्ढे दार तैयार कर लेना चाहिए। 50 सेंटीमीटर व्यास की दर से 1 मीटर गहरे गड्ढे मई के महीने में खोद लेना चाहिए।

उन गड्ढों में करीब 30 से 40 प्रति किलोग्राम सड़ी गोबर की खाद को मिट्टी में अच्छी तरह से मिलाकर उनमें 100 ग्राम क्लोरोपाइरिफास पाउडर मिलाना चाहिए। इन प्रतिक्रिया को अपनाकर बीज रोपण की क्रिया को करना चाहिए।

दशहरी आम की खेती

कृषि विशेषज्ञों के अनुसार दशहरी आम की खेती मलिहाबाद में की जाती है। वैसे तो उत्तर प्रदेश में 14 बेल्ट है और इन 14 बेल्ट में आम की खेती की जाती है परंतु दशहरी आम का स्वर्ग (जन्नत) मलिहाबाद को कहा जाता है। इसी वजह से दशहरी आम की खेती करने के लिए मलिहाबाद को सबसे श्रेष्ठ कहा जाता है।

आंकड़ों के अनुसार मलिहाबाद में करीब 3,0,000 हेक्टेयर के क्षेत्रों में सिर्फ और सिर्फ आम की खेती ही की जाती है। अपनी इन सभी विशेषताओं के कारण उत्तर प्रदेश आम की उत्पादकता के लिए दूसरे नंबर पर आता है। सबसे ज्यादा आम का उत्पादन करने वाला उत्तर प्रदेश, भारत को कहा जाता है। दशहरी आम की खेती करने वाला पहला राज्य आंध्र प्रदेश है। जहां इसकी खेती भारी मात्रा में की जाती है इसीलिए आंध्रप्रदेश दशहरी आम की उत्पादकता के लिए अब तक नंबर वन की जगह बनाए हुए हैं।

विदेशों में दशहरी आम की बढ़ती मांग

दशहरी आम देश और विदेश दोनों जंगहो में काफी पसंद किया जाता है इसीलिए इसकी मांग विदेशों में बढ़ती जा रही है। वैसे तो दशहरी की मुख्य राजधानी लखनऊ है। परंतु दशहरी आम को करीब के गांवों में जैसेरू काकोरीइलाके नन्दी फिरोजपुर आदि में इसकी पैदावार होती है। दशहरी आम कई विदेशी राज्य में काफी पसंद किए जाते हैं, इसीलिए इन्हें उन राज्य में भेजा जाता है जैसे रू पाकिस्तान, मलेशिया, नेपाल , सिंगापुर, दक्षिण
कोरिया, हांगकांग, फिलीपींस जैसे विदेशी राज्य है जहां दशहरी आम को भारत देश से भेजा जाता है।

दशहरी आम की पैदावार

आंकड़ों के मुताबिक दशहरी आम लगभग 20 लाख टन हर साल पैदा होते हैं। दशहरी आम उत्तर प्रदेश में भारी मात्रा में उत्पाद किया जाता है। जैसा कि हम आपको पहले ही बता चुके हैं।

कि लखनऊ के पास स्थित गांव जिसका नाम दशहरी है। उसकी वजह से इस आम का नाम दशहरी पड़ा, कहा जाता हैं कि दशहरी आम का पहला पेड़ लखनऊ में आज भी स्थित है। यह पेड़ लखनऊ के पास के ही काकोरी स्टेशन के समीप दशहरी गांव में लगा हुआ है। इस पेड़ का ही पहला दशहरी आम आया था। इस पहले दशहरी आम के पेड़ की आयु लगभग दो सौ साल तक के आसपास बताई जाती है। इस आम के पेड़ को मान्यता देते हुए। इसे मदर ऑफ मैंगो ट्री से सम्मानित कर बुलाया जाता है। उत्तर प्रदेश में मलिहाबाद दशहरी आम उत्पाद करने वाला सबसे बड़ा क्षेत्र माना जाता हैं।

दशहरी आम के फायदे

दशहरी आम, दशहरी आम न सिर्फ खाने बल्कि इसके विभिन्न फायदे हैं, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत ही फायदेमंद होता है। यदि आप अभी तक इनके फायदों से वाकिफ नहीं तो चलिए हम आपको इनके कुछ फायदे बताते हैंरू

कैंसर जैसी भयानक बीमारियों से बचने के लिए आम स्वास्थ्य के लिए बेहद ही फायदेमंद होते है। क्योंकि आम में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट कोलोन जैसे आवश्यक तत्व ल्यूकेमिया और प्रोस्टेट कैंसर से शरीर का बचाव करते हैं। क्यूर्सेटिन, एस्ट्रागालिन और फिसेटिन जैसे आवश्यक तत्व कैंसर की रोकथाम करने में बहुत सहायक होते हैं।

दशहरी आम में विटामिन ए की पूर्ण मात्रा पाई जाती है। विटामिन ए के जरिए आंखों की रोशनी बढ़ती है इसीलिए दशहरी आम खाने से आप अपनी आंखों की चमक और रोशनी दोनों को बरकरार रख सकते हैं।

दशहरी आम में विटामिन सी और फाइबर उच्च मात्रा में पाए जाते हैं। इन दोनों तत्वों के जरिए हम अपने शरीर के खराब असंतुलित कोलेस्ट्रॉल को संतुलित बनाए रख सकते हैं।

दशहरी आम बहुत ही फायदेमंद होता है। यदि आप आम के गूदे को अपने चेहरे पर लगाते हैं। या फिर मसाज करते हैं तो आपका चेहरा चमकता हुआ दिखाई देगा। साथ ही साथ विटामिन सी की मदद से संक्रमण रोगों से भी बचाव कर सकते हैं

दशहरी आम में मौजूद एंजाइम्स आप की पाचन क्रिया को बेहतर बनाए रखने में सहायक होते हैं। इसमें
मौजूद एंजाइम्स प्रोटीन को तोड़ने का कार्य करते हैं
जिसकी वजह से भोजन बहुत जल्दी पच जाता है। साथ ही साथ यह वजन कम करने में भी सहायक होते हैं।

चौसा आम की विशेषताए

चौसा आम

चौसा आम बाजार और मार्केट में जुलाई के महीने में आता है चौसा आम का इंतजार लोग बहुत ही बेसब्री से करते हैं। क्योंकि इस आम के गूदे और रेशों मे इतनी मिठास होती है कि खाने के बाद मन मोह हो जाता है। चौसा आम दिखने में बेहद ही खूबसूरत लगता है और इसमें भीनी भीनी खुशबू आती है। सभी आमों की अहमियत कम हो जाने के बाद चौसा आम की अहमियत खास हो जाती है। चौसा आम के संदर्भ में लोगों का यह कहना है। कि करीबन सन १५३९ में बिहार क्षेत्र चौसा में शेरशाह सूरी द्वारा हुमायूं से युद्ध के दौरान शेरशाह सूरी ने जब युद्ध जीत लिया था। युद्ध जीतने के बाद इसे चौसा आम के नाम से
उपाधि प्रदान की गई थी। जानकारियों के मुताबिक उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले में चौसा आम की उत्पत्ति हुई थी। कुछ इस प्रकार इस आम का नाम चौसा आम पड़ा है।

चौसा आम का वर्तमान स्थान

इस चौसा आम का वर्तमान स्थान पाकिस्तान को कहा जाता है। इसकी मूल पैदावार करने वाला क्षेत्र पाकिस्तान है। पाकिस्तान के करीब मीरपुरखास ,सिंधु तथा मुल्तान और पश्चिमी बंगाल ,साहीवाल आदि, जहां पर इस चौसा आम की पैदावार होती थी यह सभी क्षेत्र चौसा आम का वर्तमान स्थान है। चौसा आम की इस किस्म को भारत तथा उपमहाद्वीप में सबसे ज्यादा लोकप्रिय बनाने का श्रेय शेरशाह सूरी को ही जाता है। जिन्होंने पूरे भारतीय महाद्वीप में चौसा आम को श्रेष्ठ बना दिया। या कुछ आवश्यक बातें थी जो चौसा आम के वर्तमान स्थान से जुड़ी हुई थी।

चौसा आम को जीआई टैग दिलाने का प्रयास

चौसा आम की बढ़ती मांग को देखते हुए केंद्रीय कृषि मंत्रालय ने इसे जीआई टैग दिलाने का प्रयास करना शुरू कर दिया है। क्योंकि उत्तर प्रदेश के मलिहाबादी दशहरी आम को जीआई टैग दिलवाने के बाद, अब केंद्रीय कृषि मंत्रालय चौसा आम की ओर बढ़ रहा है। जिससे कि जीआई टैग द्वारा इसकी अच्छी कीमत विदेशों से मिल सके। इन जीआई टैग द्वारा चौसा आम और भी खास हो जाएगा। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में काम करने वाले कर्मचारियों ने आईसीएआर के अंतर्गत, यूपी के मंडी परिषद से आग्रह करते हुए। चौसा आम की किस्म को जीआई टैग मान्यता प्राप्त करने की अनुमति मांगी है।

शेरशाह सूरी और चौसा आम के संबंध के विषय में जाने

कहा जाता है कि मुगल सम्राट शेरशाह सूरी को चौसा आम की यह किस्म बहुत ही पसंद थी।

आम की इस किस्म को चौसा नाम हुमायूं को हराने के बाद दिया गया था। जहां पर हुमायूं को हराया गया था। उस जगह के नाम पर आम की इस किस्म का नाम चौसा आम रखा गया था।

शेरशाह सूरी द्वारा यह किस्म और यह नाम आज भी बहुत मशहूर हैं। दुनिया भर में लगभग आम की डेढ़ हजार किस्में मौजूद है और उन किस्मों में से एक किस्म चौसा आम की है।

मुगलों के समय चौसा आम बहुत ही ज्यादा लोकप्रिय था। हुमायूं को हराने के बाद शेरशाह सूरी बहुत ही ज्यादा खुश थे और इस खुशी के चलते उन्होंने आम कि इस किस्म को चौसा आम के नाम की उपाधि प्रदान की कुछ इस प्रकार चौसा आम और शेरशाह सूरी के संबंध थे।

चौसा आम के फायदे

- चौसा आम खाने से शरीर स्वस्थ रहता है और गर्मियों में लू लगने से बचाव होता है। चौसा आम खाने से ताजगी बनी रहती है और गर्मी कम लगती है।
- चौसा आम में भरपूर मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट और एंटीऑक्सीडेंट जैसे आवश्यक तत्व मौजूद होते हैं।
- चौसा आम खाने से इम्यूनिटी सिस्टम अच्छा रहता और पाचन क्रिया संतुलित बनी रहती है
- ब्लड प्रेशर संतुलित रहता है तथा आंखों की रोशनी भी बढ़ती है।
- किसानों को चौसा आम की फसल से बहुत फायदा होता हैं क्योंकि इसमें कम लागत में फसल तैयार हो जाती है और बेहद मुनाफा होता है। मार्केट, दुकानों में चौसा आम बहुत ऊंचे दाम पर बेचे जाते हैं।

www.youtube.com/c/MeriKheti

चौसा आम का बीज उपचार

चौसा आम का बीज रोपण करने से थोड़ी देर पहले आपको चौसा आम की फसल के बचाव के लिए डाइमेथोएट में कुछ देर पत्थरों को डूबा कर रखना चाहिए। इस प्रक्रिया द्वारा चौसा आम की फसल सुरक्षित रहती है। किसी भी तरह के फंगल से फसल को बचाने के लिए कैप्टन कवकनाशी के साथ बीजों को मिलाकर रखना चाहिए।

चौसा आम के लिए उपयुक्त जलवायु

चौसा आम की अच्छी फसल के लिए सबसे अनुकूल जलवायु उष्णकटिबंधीय जलवायु होती है। ज्यादा ठंड इस पौधे के लिए उपयुक्त नहीं होती हैं। समतल जलवायु में पौधे भारी मात्रा में उत्पादन होते हैं। चौसा आम की किस्में वार्षिक और शुष्क मौसम में बहुत ही अच्छी तरह से उगती हैं।

चौसा आम के लिए उपयुक्त सिंचाई

मौसम के आधार पर आपको सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। मिट्टी में नमी बनाए रखिए जलवायु और सिंचाई का स्त्रोत समान होना चाहिए। नए पौधों को हल्की सिंचाई देते रहें। चौसा आम की फसल के लिए सबसे सर्वोत्तम सिंचाई हल्की सिंचाई होती है।

जब बरसात का मौसम आ जाए और खूब तेज बारिश होने लगे, तो आपको बारिश के आधार पर ही चौसा आम की फसलों की सिंचाई करना है। भूमि के चारों तरफ भली प्रकार से मेड बना दें। जल निकास का मार्ग बनाए, ताकि किसी तरह की सड़क गलन की समस्या न हो। चौसा आम की फसल के लिए तापमान लगभग 80 सेल्सियस से लेकर 85 सेल्सियस तक का सबसे उचित होता है।

लंगडा आम की विशेषताएं

लंगड़ा आम उत्तर भारत में सबसे प्रसिद्ध है और लंगड़ा आम बनारस में बहुत ही मशहूर है। वैसे तो बनारस का पान, साड़ी और भी आवश्यक चीजें है जो बनारस की बहुत ही ज्यादा मशहूर है। लेकिन बनारस के लंगड़े आम की अपनी एक अलग जगह है। लोगों में यह लंगड़ा आम इतना लोकप्रिय है कि लंगड़े आम की कोई भी कीमत देने के लिए लोग तैयार रहते हैं इसके स्वाद को चखने के लिए।

लंगड़े आम का परिचय

लंगड़ा आम की पैदावार उत्तर प्रदेश के बनारस में होती है। लंगड़ा आम करीबन ३०० साल पुराना कहा जाता है। प्राप्त की गई जानकारियों के अनुसार लंगड़ा आम की स्थापना एक साधु द्वारा की गई थी जो कि शिव मंदिर में आकर निवास कर रहे थे। लंगड़ा आम दिखने में बहुत ही खूबसूरत होते हैं इनकी गुठली बहुत ही छोटी होती और गूदे बहुत ही ज्यादा होते हैं इसीलिए इन्हें और भी ज्यादा पसंद किया जाता है।

इसका नाम लंगड़ा आम क्यों पड़ो

यदि आप अभी भी इस बात से अपरिचित हैं कि इस आम को लंगड़ा आम के नाम से क्यों पुकारा जाता है? तो निश्चित रहे हम आपके इस प्रश्न का उत्तर जरूर देंगे।

इस आम को लंगड़ा आम इसलिए कहा जाता है कि, जिस साधु जी द्वारा इस पौधे का रोपण हुआ था, जो इस पेड़ की देखरेख करते थे वह लंगड़े थे। इस लिए पेड़ से पैदा होने वाले सभी आमो को लंगड़ा आम का नाम दिया गया।

भारत में इस प्रजाति के सभी आम लंगड़े आम के नाम से ही प्रसिद्ध हैं।

लंगड़ा आम का इतिहास

पुरानी जानकारियों के चलते लंगड़े आम का अपना अलग ही इतिहास हैं। कि करीब ढाई सौ साल पहले की यह कहानी या फिर घटना कहे। बनारस में एक बहुत ही छोटा सा शिव मंदिर था। जो लगभग १ एकड़ की जमीन पर बना हुआ था। चार दिवारी के अंदर यह मंदिर स्थापित था। एक दिन इस शिव मंदिर में एक साधु आया और पुजारी से कुछ दिन मंदिर में ठहरने को कहा। पुजारी जी ने उस साधु को मंदिर में ठहरने की अनुमति दे दी। पुजारी जी ने कहा यहां बहुत सारे कच्छ है जिसमें आप चाहो रह सकते हो। साधु जी के पास दो छोटे—छोटे आम के पौधे थे। आम के पौधों को साधु जी ने अपने हाथों से मंदिर की पीछे वाली दीवार के पास अपने हाथों से रोपड़ कर दिया। रोज सुबह साधु जी पेड़ को पानी देते पेड़ की अच्छी तरह से देखभाल करते थे।
साधु जी करीब ४ साल उस मंदिर में रुके रहे और पेड़ों की सेवा करते रहें। ४ साल के अंदर पेड़ काफी बड़ा हो गया और उसमें छोटी—छोटी कलियां भी खिल गई। साधु जी ने उन कलियों को शिव मंदिर पर चढ़ा दिया। साधु जी बनारस से चले गए, जाने से पहले साधु जी ने इस आम के पेड़ से निकलने वाले फल को प्रसाद के रूप में बांटने को कहा और पुजारी जी वैसा ही करते रहे भक्तों को शिव प्रसाद के रूप में वह आम के टुकड़े देते थे।

इस लंगड़े आम की खबर काशी नरेश के कानों तक जा पहुंची और वह एक दिन स्वयं इस आम के वृक्ष को देखने आए रामनगर के मंदिर में बहुत ही श्रद्धा के साथ। काशी नरेश ने भगवान शिव की पूजा की और फिर पुजारी जी से कहा कि आप मुझे इस आम की कुछ जड़े दे सकते हैं। पुजारी जी ने कहा मैं आपकी आज्ञा को कैसे अस्वीकार कर सकता हूं। मैं साधना पूजा के दौरान शंकर जी से प्रार्थना करता हूं। जैसे ही मैं शिव जी का संकेत पाता हूं आप के महल में आकर आम के रूप में प्रसाद लाऊंगा।

काशी नरेश को वृक्ष लगाने की आज्ञा प्राप्ति हो गए। महल के समीप एक छोटा सा बाग बनाकर इन बीजों का रोपण किया गया। वर्षा ऋतु के बाद काफी भारी मात्रा में वृक्ष बनकर फल देने लगे। इस प्रकार से रामनगर में लंगड़े आम के बहुत सारे भाग बन गए। बनारस में खुले स्थानों में या गांव में लंगड़े आम की भरमार नजर आती है। लोकप्रिय लंगड़े आम का कुछ इस प्रकार का इतिहास रहा है।

लंगड़ा आम खाने के फायदे

लंगड़ा आम खाने के बहुत से फायदे हैं और यह फायदे निम्न प्रकार है .

लंगड़ा आम स्वाद के मामले में सबसे स्वादिष्ट और बेहतर होता है। मुंह में मीठे रस की तरह घुल जाता है और मुंह का स्वाद १ मिनट में बदल देता है।
यदि आप लंगड़े आम का सेवन करते हैं तो आपके शरीर का कोलेस्ट्रोल पूर्ण रूप से नियंत्रण में रहता है।
आम में अच्छी मात्रा में विटामिन सी मौजूद होता है विटामिन सी के साथ ही साथ इसमें फाइबर जैसे गुण भी मौजूद होते हैं। यह सभी आवश्यक तत्व विशेष रुप से खराब एलडीएल कोलेस्ट्रॉल को कम करने में मदद करते हैं।
लंगड़े आम से आप जूस, जैम, शेक या अन्य प्रकार की डिशेस भी बना सकते हैं जो आपको पसंद हो।

लंगड़े आम से किसानों को अच्छा मुनाफा पहुंचता है और यह फसल किसी भी तरह की कोई लागत नहीं मांगती है। लंगड़े आम से किसानों को अच्छे आय की प्राप्ति होती है।

केसर आम की विशेषताएं

केसर आम की खुशबू एकदम केसर जैसी होती है यह केसर आम स्वाद में बहुत ही मीठा होता है। केसर आम की मुख्य पैदावार जूनागढ़ और अमरेली जिले में मौजूद गिर्नार पर्वत के तलहटी में केसर आम का उत्पादन होता है।

कहा जाता है कि केसर आम को भौगोलिक संकेत की भी प्राप्ति है।

इस आम का नाम केसर आम क्यों पड़ा

प्राप्त की गई जानकारियों के अनुसार इस आम को केसर के नाम से इसलिए पुकारा जाता है। क्योंकि इस आम में केसर की खुशबू आती है इसीलिए इसका नाम केसर आम पड़ा।

केसर आम की पैदावार उत्तर प्रदेश में बहुत ही ज्यादा मात्रा में होती है।

केसर आम का इतिहास

कृषि विशेषज्ञों के अनुसार केसर आम को वजीर सेल भाई द्वारा वनथाली में उगाया गया था। सन 1931 के करीब जूनागढ़ में केसर आम का उत्पादन किया गया था। केसर आम को गिरनार की तलहटी और जूनागढ़ के समीप लाल डोरी फॉर्म में 75 से 80 ग्राफ्ट तक लगाया गया था। केसर आम की पहचान और इसका नाम 1934 में केसर के रूप में लोगों के बीच जाना जाने लगा। मोहम्मद महाबत खान जो जूनागढ़ के नवाब कहे जाते थे। जब उन्होंने इस नारंगी और खूबसूरत फल को देखा , देखते ही उन्होंने कहा या तो केसर है। तब से इस आम को केसर के नाम से ही जाना जाता है।

केसर आम का उत्पादन

हर साल केसर आम का उत्पादन लगभग 20,000 हेक्टेयर क्षेत्र की दर पर उगाया जाता है। केसर आम की इस उत्पादकता को गुजरात के सौराष्ट्र के जूनागढ़ तथा अमरेली जिले में उगाया जाता हैं। कृषि केंद्र परिषद के अनुसार केसर आम का वार्षिक उत्पादन करीबन दो लाख टन के समीप होता है। अभयारण्य क्षेत्र में केसर आम को गिर केसर आम के नाम से भी पुकारा जाता है। केसर आम की किस्म बाकी किस्मों से बहुत ही ज्यादा महंगी होती है

केसर आम को जीआई टैग की अनुमति

केसर आम का भौगोलिक पंजीकरण का प्रस्ताव गुजरात के एग्रो इंडस्ट्रीज कॉरपोरेशन द्वारा रखा गया था। प्रस्ताव के स्वीकार हो जाने के बाद केसर आम को जीआई टैग की प्राप्ति हुई।
जीआई टैग के तहत केसर आम को विभिन्न विभिन्न देशों में भेजा जा सकता है। जिसे स्कैन कर केसर आम का मुख्य पता और जानकारी जान सकेंगे।

केसर आम का रोपण

केसर आम का वृक्ष रोपण करने से पहले किसान कुछ देर के लिए बीजों को डाइमेथोएट में डूबा कर रखते हैं। इस क्रिया द्वारा फसल में किसी भी तरह का कोई नुकसान नहीं होता और आम की फसल पूरी तरह से सुरक्षित रहती हैं।

बीजों को थोड़ी थोड़ी दूरी पर रोपण करते हैं और हल्का पानी का छिड़काव करते हैं।

केसर आम के लिए उपयुक्त जलवायु

केसर आम की खेती दो प्रकार की जलवायु में सबसे सर्वोत्तम होती है पहली उष्ण और दूसरी समशीतोष्ण जलवायु , दोनों ही जलवायु सबसे अच्छी जलवायु मानी जाती है केसर आम की खेती के करने के लिए। केसर आम की खेती के लिए तापमान करीब 23.1 से लेकर 26.6 डिग्री सेल्सियस सबसे उत्तम माना जाता है।

केसर आम की खेती आप किसी भी तरह की भूमि में आराम से कर सकते हैं।

केसर आम के लिए उपयुक्त सिचाई

केसर आम की फसल की सिंचाई लगभग एक से 2 दिन के अंतराल पर करनी चाहिए।

केसर आम की फसल के लिए मिट्टी और जलवायु दोनों का खास ख्याल रखना चाहिए।बीच—बीच में लगातार हल्की हल्की सिंचाई करते रहे। हल्की सिंचाई लगातार करते रहने से अच्छा उत्पादन होता है। गर्मियों के मौसम में कम से कम 7 से 8 दिनों के भीतर सिंचाई करते रहना चाहिए। केसरआम जब पूर्ण रूप से विकसित हो जाए तब हल्की सिंचाई की आवश्यकता होती है।

केसर आम की सप्लाई

पिछले साल की ही बात है केसर आम बहुत ही ज्यादा चर्चा में था। जब केसर आम मार्केट में आया था। तब इसका वजन लगभग 250 ग्राम से लेकर 400 ग्राम तक का था। अपनी इन खूबियों के चलते केसर आम मार्केट में बहुत ही ज्यादा लोकप्रिय हो गया था। लोगों में केसर आम की मांग काफी बढ़ गई थी कुछ ऐसे राज्य हैं जहां यह आम सप्. लाई होने लगे थे। जैसेरू कोलकाता , दिल्ली, हैदराबाद बेंगलुरु, रायपुर , आदि जगह केसर आम की सप्लाई तेजी से बढ़ने लगी।

केसर आम खाने के फायदे

केसर आम खाने के बहुत सारे फायदे हैं और यह फायदे कुछ इस प्रकार है .

सबसे पहले बात इसके स्वाद की करे, तो केसर आम स्वाद में सबसे बेहतर होता है। इसमें केसर की भीनी खुशबू आती है और देखने में बहुत ही आकर्षित लगता है।
यदि आप केसर आम खाते हैं तो आपका चेहरा चमकता हुआ दिखाई देगा। रोजाना केसर आम खाने से चेहरे का ग्लो बढ़ता है स्किन सॉफ्ट रहती है।
केसर आम में मौजूद पोषक तत्व आपको गर्मी में लू लगने से बचाव करते हैं।
केसर आम में एंटीऑक्सीडेंट जैसे आवश्यक तत्व मौजूद होते हैं। यह आवश्यक तत्व हमारे शरीर को स्वस्थ रखते हैं।
हमारी पाचन क्रिया को मजबूत बनाते हैं आंखों की रोशनी को बढ़ाते हैं गिरते हुए बालों की समस्या को दूर करते हैं।
केसर आम का सेवन करने से हमारे शरीर का कोलेस्ट्रॉल काफी बेहतर रहता है। हमारे शरीर का वजन सामान्य रहता है।
किसानों को केसर आम की फसल से बहुत अच्छा मुनाफा होता है जिससे वह आय निर्यात की प्राप्ति कर लेते हैं।

तोतापुरी आम की विशेषताएं

आम की विभिन्न किस्मों में से सबसे बेहतरीन किस्म तोतापुरी आम की होती है। जो दिखने में हल्का केसरी रंग का होता है इसका ऊपरी हिस्सा केसरी रंग और नीचे का हल्का हरा दिखाई देता हैं। तोतापुरी आम बेहद ही खूबसूरत होता है। यह तो बात हुई इस आम की ऊपरी रंगत कि अब हम बात करते हैं इसके स्वाद की -
तोतापुरी आम स्वाद में बेहद ही मीठा होता है। आम की किस्मों में इसकी जगह टॉप फाइव के अंदर आती है। तोतापुरी आम के गोदे बहुत ही मीठे होते हैं चीनी की तरह मुंह में घुल जाता है।

आम की इस किस्म को तोतापुरी आम क्यों कहते हैं

यदि आपने कभी तोतापुरी आम को हाथ में लिया होगा तो आप खुद समझ गए होंगे। कि इसे तोतापुरी आम क्यों कहते हैं। यदि आप इस बात से अभी तक अपरिचित है तो हम आपको बताते हैं। कि इस आम को तोतापुरी आम क्यों कहा जाता है:

जब आप तोतापुरी आम को अपने हाथ में लेंगे तो आपको दिखाई देगा। कि इसका आकार चिड़िया की चोंच की तरह दिखाई देता हैं और इसका नीचे का हिस्सा पलटने पर पूछ की तरह निकला हुआ होता है। इसकी आकृति पूरी तरह से तोते की मानें होती है और जब आम छोटे होते है तो यह पूरी तरह ही तोते के रूप में नजर आते हैं। बाकी बड़े होने पर इनकी आकृति थोड़ी बहुत बदल जाती है। परंतु यह पूर्ण रूप से तोता के रूप में दिखाई देते हैं इसीलिए इसे तोतापुरी आम के नाम से पुकारा जाता है।

तोतापुरी आम का वजन

तोतापुरी आम का वजन लगभग 400 के ग्राम के ऊपर होता है। यह स्वाद में अलग होने के साथ अपनी खूबी के लिए भी जाने जाते हैं।
वजन के आधार पर या मार्केट में ऊंचे दाम पर बिकते हैं।

तोतापुरी आम का उत्पादन

तोतापुरी आम की खेती साउथ इंडिया, तमिलनाडु, बेंगलुरु, कर्नाटक आदि शहरों में ऊंचे पैमाने पर होती है। तोतापुरी आम की फसल का उत्पादन इन सभी क्षेत्रों में हो रहा है। यहां तक कि पूर्वी उत्तर प्रदेश झारखंड या पश्चिमी बंगाल आदि शहरों में भी इनकी खेती शुरू हो गई है।

तोतापुरी आम की खेती के लिए उपयुक्त भूमि का चयन

तोतापुरी आम की खेती के लिए सभी प्रकार की भूमि उपयुक्त होती है। तोतापुरी आम की खेती आप पहाड़ी पथरीली मिट्टी में भी कर सकते हैं। यह सभी भूमि तोतापुरी आम के लिए उपयुक्त मानी जाती हैं।

तोतापुरी आम के लिए उपयुक्त मिट्टी का चयन

तोतापुरी आम के लिए सभी प्रकार की मिट्टी उपयुक्त होती हैं। लेकिन किसान जिस मिट्टी का चयन करते हैं वह दोमट मिट्टी होती है। तोतापुरी आम की खेती आप कड़ी और शुष्क दोनों प्रकार की भूमि में कर सकते हैं। जब वर्षा का मौसम करीब आ जाए, तब आपको इस बात का ख्याल रखना होगा। कि किसी भी प्रकार से पानी इकट्ठा ना हो, सड़न की समस्या ना पैदा हो। इसके लिए आपको जल निकास का प्रबंध पहले भी कर देना चाहिए।

तोतापुरी आम की सिंचाई

तोतापुरी आम का बीज रोपण करने से पहले आपको दो से तीन बार सिंचाई कर लेनी चाहिए। आवश्यकतानुसार दो से 5 बार आप सिंचाई करते रहे। जब पेड़ों में फल आने शुरू हो जाए, तो दो से तीन बार सिंचाई करना अत्यंत आवश्यक होता है।

तोतापुरी आम का इतिहास

तोतापुरी आम के इतिहास के विषय में प्राप्त के जानकारी के अनुसार सन 1901 में फ्लोरिडा द्वारा एक मैसेज के रूप में और करीब 1960 दशक में इस आम की किस्म को तोतापुरी के रूप में आयात करना शुरू हो गया था। तोतापुरी आम दो प्रकार की किस्में फ्लोरिडा और एंडरसन तथा ब्रूक्स किस्मों के जनक कहे जाते हैं। तोतापुरी
भारत में अन्य आम की किस्मों में सबसे प्रमुख है।

तोतापुरी आम का अचार

आचार जिसका नाम सुनते ही मुंह में पानी आ जाता है। अचार चाहे जिस भी प्रकार से

बने हो चाहे वह मीठे हो, खट्टे हो, चटपटे हो सभी प्रकार के अचार खाने में बहुत ही स्वादिष्ट लगते हैं।
अचार आप हर तरह से बना सकते है और हर प्रकार के आम का अचार बनता है। लेकिन सबसे अच्छा और बेहतर अचार तोतापुरी आम का होता है। क्योंकि तोतापुरी आम थोड़ा कम खट्टे होते हैं जिन्हें खट्टा कम पसंद हो उनके लिए तोतापुरी का अचार सबसे बेहतर होता है।

तोतापुरी आम खाने के फायदे

तोतापुरी आम में विभिन्न प्रकार के आवश्यक तत्व मौजूद होते है। जिससे हमारे शरीर को लाभ पहुंचता है यह आवश्यक तत्व कुछ इस प्रकार है:

यदि आप तोतापुरी आम का सेवन करते हैं तो आपका पाचन तंत्र ठीक रहता है। आम में मौजूद प्रतिरोधक क्षमता हमारे शरीर को स्वच्छ रखती है।
तोतापुरी आम खाने से हमें विटामिन डी और विटामिन सी इन दो महत्वपूर्ण तत्वों की प्राप्ति होती है।
रोजाना तोतापुरी आम का सेवन करने से त्वचा चमकदार और स्वस्थ रहती है।
शरीर का वजन घटाने और कार्य की क्षमता को बढ़ावा देता है।
आजकल हेयर फॉल की समस्या हर किसी को होती है। हेयर फॉर की समस्या कहे तो आम हो गई है। इस समस्या से बचने के लिए हमें आम का सेवन करना चाहिए क्योंकि इसमें मौजूद आवश्यक तत्व हेयर फॉल की समस्या को रोकते हैं।
तोतापुरी आम की फसल किसानों के हित में आय का बहुत अच्छा साधन स्थापित करती है। कम लागत में किसान इस फसल से अच्छा फायदा उठा लेते हैं।

हिमसागर आम की विशेषताएं

हिमसागर आम दिखने में पीला और नारंगी नजर आता है। इनका आकार काफी बड़ा होता है। यह वजन मे लगभग 250 ग्राम से लेकर 350 ग्राम तक के होते हैं हिमसागर आम मध्यम आकार के होते है। हिमसागर आम में लगभग गुदे की मात्रा 77% होती हैं। कहां जाता है कि हिमसागर आम की खूबियों के चलते इन्हें विभिन्न प्रकार की कविता और गानों से भी सम्मानित किया जाता है। सभी आमों की किस्मों में से हिमसागर आम की किस्म श्रेष्ठ मानी जाती है।

हिमसागर आम का उत्पादन

हिमसागर आम का उत्पादन भारत के पश्चिम बंगाल तथा बांग्लादेश के राजशाही क्षेत्रों में उत्पादन होता है। अपने बेहतरीन स्वाद और खुशबूदार सुगंध के चलते हिमसागर आम को दुनिया भर में सभी आमो से ऊपर रखा गया है। और हिमसागर आम को आमो का राजा भी कहा जाता है।

हिमसागर आम की फसल का बीज उपचार

हिमसागर आम की फसल की सुरक्षा करने के लिए आपको इसके बीज रोपण करने से थोड़ी देर पहले या कुछ मिनटों पहले इस फसल के उपचार के लिए डाइमेथोएट का उपयोग करना चाहिए। डाइमेथोएट से फसलों की सुरक्षा होती है। कैप्टन कवकनाशी के इस्तेमाल से फंगल संक्रमण से हिमसागर आम की फसल सुरक्षित रहती है।

हिमसागर आम की बुआई का समय

किसान हिमसागर आम की बुआई का समय मह जुलाई और अगस्त के बीच का बताते हैं। हिमसागर आम का बीज रोपण आमतौर पर वर्षा वाले क्षेत्रों में इन 2 महीनों में होता है।सिंचित क्षेत्रों में फरवरी और मार्च के बीच इनकी बुवाई की जाती है। जिन क्षेत्रों मे वर्षा बहुत ज्यादा मात्रा में होती है वहां इन बीजों की बुवाई बरसात के आखिरी महीने में होती है।

हिमसागर आम की फसल के लिए उपयुक्त जलवायु

किसानों के अनुसार हिमसागर आम की फसल के लिए सबसे उपयुक्त जलवायु उष्णकटिबंधीय तथा उपोष्णकटिबंधीय की होती हैं। कृषि विशेषज्ञों के द्वारा हिमसागर आम की फसल भारत देश में सभी क्षेत्रों में उगाई जाती है। किंतु 600 मीटर से ऊपर के क्षेत्रों में या फिर व्यवसायिक रूप से या फसल आप नहीं उगा सकते हैं। हिमसागर आम की फसल ज्यादा ठंड को अपने अंदर बर्दाश्त नहीं कर सकती हैं। जब पौधे नए हो तब तो खासकर फसल का ख्याल रखना होता है।

हिमसागर आम की फसल की सिंचाई

जब हिमसागर आम के पौधे नए होते हैं। तब लगातार सिंचाई की जरूरत होती है। बाकी हिमसागर आम की फसल की सिंचाई मिट्टी के प्रकार और जलवायु पर निर्भर होती है।

किसान भाइयों के अनुसार हल्की लगातार सिंचाई हर फसल के लिए बहुत ही ज्यादा सर्वोत्तम मानी जाती है। दो से तीन के अंतराल पर लगातार सिंचाई करते रहें।

हिमसागर आम की फसल के लिए उपयुक्त मिट्टी

वैसे तो हिमसागर आम की फसल के लिए हर तरह की मिट्टी उपयुक्त हैं। परंतु सबसे उपयुक्त मिट्टी दोमट मिट्टी कही जाती हैं। जब आप बीज रोपण करें, तो इस बात का ख्याल रखें। कि जल निकास की व्यवस्था उचित होनी चाहिए। ताकि किसी भी तरह का जलभराव ना हो जिससे कि फसल खराब हो जाए।

हिमसागर आम के फायदे

हिमसागर आम अपने स्वाद और खुशबू के लिए जाना जाता हैं हिमसागर आम को आमो का राजा भी कहा जाता है। यही कारण है कि लोग इसे खाना बहुत ज्यादा पसंद करते।

कभी कभी उल्टा सीधा खाना खा लेने से कब्ज जैसी समस्या उत्पन्न हो जाती है। और यह समस्या बच्चे, बड़े, बूढ़े आदि सभी को होती है। ज्यादा दिन कब्ज की समस्या होना अच्छा नहीं है, इससे भिन्न प्रकार की बीमारियों का जन्म भी हो सकता है। हिमसागर आम में मौजूद विटामिन सी और फाइबर जैसे गुण पाचन शक्ति को मजबूत बनाते हैं। जिससे कब्ज जैसी भयानक समस्या से आप अपने शरीर का बचाव कर सकते हैं। जब गर्मी का मौसम आता है तो खूब तेज धूप और साथ ही साथ भयानक लू चलती हैं। जिसकी वजह से व्यक्तियों को तेज बुखार या फिर सरदर्द जैसी विभिन्न प्रकार की समस्या उत्पन्न हो जाती हैं। कभी—कभी लू के चपेट में आ जाने से मृत्यु भी हो जाती है। ऐसी स्थिति में आपको कच्चे हिमसागर आम का पना बनाकर सेवन करना चाहिए जिससे आप अपने शरीर का बचाव करें।

आंखों की रोशनी समय के साथ कम होती रहती है। परंतु यदि आप रोजाना आम का सेवन करते हैं तो आपकी आंखों की रोशनी बढ़ती है। हिमसागर आम में मौजूद विटामिन ए की भरपूर मात्रा होती है। जिससे हमारी आंखों की रोशनी में और बढ़ोतरी होती है इसीलिए आप लगातार हिमसागर आम का सेवन करें।

हड्डियों को मजबूत बनाना बेहद ही जरूरी होता है। परंतु हमारे शरीर को उस प्रकार का आहार नहीं मिल पाता जिस प्रकार से हमारे शरीर को जरूरत होती है। हिमसागर आम में भरपूर मात्रा में आयरन मौजूद होता है, जो हमारी हड्डियों को मजबूत बनाता है।

हिमसागर आम में एंटीकैंसर जैसे आवश्यक गुण होते हैं जो विभिन्न विभिन्न प्रकार के कैंसर से शरीर का बचाव करते हैं। हिमसागर आम पथरी के रोगियों के लिए बहुत उपयोगी होता है। क्योंकि इसमें विटामिन बी मौजूद होता हैं जिससे पथरी की समस्या दूर हो जाती है।

हिमसागर आम में मौजूद फाइबर से हमारे शरीर का वजन सामान्य रहता है। तथा बालों के लिए भी बहुत ही उपयोगी होता है, हृदय स्वस्थ रहता है।

हिमसागर आम में मौजूद एंटी—अस्थमैटिक गुण से दमा जैसे रोगों से भी बचाव होता है।

बंगानापल्ले आम की विशेषताएं

बंगानापल्ले आम दिखने में पीले रंग के होते हैं आम की यह किस्म बहुत ही अच्छी होती है इसके गूदे गच्छेदार होते हैं। बंगानापल्ले आम को बहुत से लोग (बेनिशान) आम, बंगानापल्ली, बंगनपल्ले, बैगनपल्ली आम, बैग. नफली (Banganapalle Mango or Benishan) भी कहते हैं।

आम की यह किस्म भारतीय राज्य के आंध्र प्रदेश में स्थित कुरनूल जिले में आम की बंगानापल्ले किस्म का उत्पादन किया जाता है।

कुरनूल जिले में लगभग बंगानपल्ले आम की 70% खेती की जाती है। भौगोलिक संकेत की दृष्टिकोण से आम की बंगानपल्ले आम का पंजीकरण भी किया जा चुका है। बंगानपल्ले आम मे विटामिन ए और सी यह दोनों ही मौजूद होता है। आंध्र प्रदेश में इस आम की बहुत ही ज्यादा मांग रहती है। अपने सर्वोत्तम स्वाद और आवश्यक तत्वों के आधार पर इस आम को, आम का राजा भी कहा जाता है।

बंगानापल्ले आम अब दक्षिण कोरिया में भी प्रसिद्ध

बंगानापल्ले आम को दक्षिण कोरिया में, भारत द्वारा भेजा गया था। इस आम की किस्म को खाकर कोरिया वाले भी बहुत ही ज्यादा दीवाने हो गए। भारत सरकार ने कोविड—19 जैसे भयानक अवस्थाओं के बावजूद भी आम की इस किस्म को लगभग 2.5 टन कोरिया दक्षिण में भेजा था। इतना ही नहीं है बल्कि भौगोलिक संकेत यानी जीआई GI सर्टिफिकेट द्वारा बंगानापल्ले आम की इस किस्म को भेजा गया था। बंगानापल्ले आमो का बहुत ज्यादा निर्यात दक्षिण कोरिया को होता है। बंगानापल्ले आम दक्षिण कोरिया का बहुत ही पसंदीदा फल है।

बंगानापल्ले आम बहुत ही महत्वपूर्ण किस्म है। जो लगभग 51 देशों में भारत द्वारा एक्सपोर्ट किया जाता है। बंगानापल्ले आम का निर्यात उच्च मात्रा में होता है। इस फसल को अन्य देशों में एक्सपोर्ट कर आय निर्यात का स्त्रोत बना रहता है।

बंगानापल्ले आम का बीज उपचार

जैसा कि हम सब जानते हैं कि बंगानापल्ले आम की फसल किसानों के लिए कितनी आवश्यक है। इससे आय निर्यात का साधन बना रहता है। तो सुनिश्चि रूप से हमें इस फसल की देखरेख करनी चाहिए। बंगानपल्ले आम की फसल की देख. रेख करने के लिए हमें बीज रोपण करने से कुछ मिनटों पहले डाइमेथोएट में पत्थरों को डूबा कर रखना चाहिए कुछ मिनटों के लिए। इस प्रक्रिया को अपनाने से फसल में किसी भी तरह का कोई फंगस या कीट नहीं लगते फसल सुरक्षित रहती है। बंगानपल्ले आम के बीजों को कैप्टन कवकनाशी बीज उपचार करने से फंगल संक्रमण से बीजों की पूर्ण रूप से सुरक्षा होती है।

बंगानापल्ले आम की बुआई का समय

बंगानपल्ले आम की बुआई किसान जिस क्षेत्र में वर्षा भारी होती है वहां बीज रोपण को बरसात के अंत में बुआई की जाती है। बीज रोपण जुलाई और अगस्त के महीने में करना उचित होता है। सिंचित क्षेत्रों में यह आमतौर पर फरवरी—मार्च के दौरान बोए जाते हैं।विभिन्न विभिन्न प्रकार के कैंसर से शरीर का बचाव करते हैं।

हिमसागर आम पथरी के रोगियों के लिए बहुत उपयोगी होता है। क्योंकि इसमें विटामिन बी मौजूद होता हैं जिससे पथरी की समस्या दूर हो जाती है।

हिमसागर आम में मौजूद फाइबर से हमारे शरीर का वजन सामान्य रहता है। तथा बालों के लिए भी बहुत ही उपयोगी होता है, हृदय स्वस्थ रहता है।

हिमसागर आम में मौजूद एंटी—अस्थमैटिक गुण से दमा जैसे रोगों से भी बचाव होता है।

बंगानापल्ले आम के लिए अनुकूल जलवायु

बंगानापल्ले आम की फसल के विषय में किसान सबसे उचित जलवायु उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय को बताते हैं। इन दो जलवायु में बंगानपल्ले आम की फसल की उत्पत्ति उच्च दर पर होती है। किसानों का यह मानना है कि इन दो जलवायु के आधार पर फसलें काफी अच्छी तरह से पनपती है। यह जलवायु पेड़ों को पूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं। बंगानपल्ले आम के लिए शुष्क मौसम सबसे अच्छा माना जाता है।

बंगानापल्ले आम की फसल की सिचाई

किसानों का कहना है कि बंगानपल्ले आम की फसल में ज्यादा सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। गर्मियों के मौसम में इस फसल की सिंचाई लगभग 7 से 8 दिनों के अंदर करनी चाहिए। बीच—बीच में हल्की सिंचाई करते रहना चाहिए जिससे की फसल में नमी बनी रहे।

फसलों के लिए हल्की सिंचाई सबसे सर्वोत्तम मानी जाती है। किसान दूसरी सिंचाई लगभग 25 से 30 दिनों के अंदर करते हैं। जब वर्षा का मौसम शुरू हो जाए, उससे पहले खेतों में जल निकास की व्यवस्था को बना लेना चाहिए। ताकि जल एकत्रित होकर किसी भी प्रकार से फसलों में सड़न न पैदा हो। इस प्रकार से किसान बंगानपल्ले आम की सिंचाई करते हैं।

बंगानापल्ले आम की फसल के लिए उपयुक्त मिट्टी का चयन

बंगानपल्ले आम की फसल के लिए सभी प्रकार की मिट्टी उपयुक्त होती है। लेकिन किसानों के अनुसार सबसे उपयुक्त मिट्टी दोमट मिट्टी होती है। खेत को अच्छी तरह से जोत लेने के बाद मिट्टियों को भुरभुरा कर लेना चाहिए। बीज रोपण करने से पहले खेत को हल्का सा नम कर देना चाहिए।

बंगानापल्ले आम को मिला जीआई टैग

आंध्र प्रदेश में लगभग बंगानापल्ले आम की फसल को १०० साल से भी ज्यादा वक्त से उगाया जा रहा है। इस बंगानापल्ले आम की फसल को आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा जीआई टैग द्वारा पंजीकृत कर दिया गया है। यह रसीला बंगानापल्ले आम भौगोलिक संकेत जीआई टैग द्वारा प्रमाणित है। बंगानापल्ले आम के विषय में आंध्र प्रदेश सरकार का कहना है और जीआई टैग वाले दस्तावेजों में भी लिखा है कि यह बंगानापल्ले आम ३ महीनों तक कोल्ड स्टोरेज में भी अपनी पूरी गुणवत्ता को बनाए रखने की क्षमता रखता हैं।

जीआई टैग का मतलब होता है कि किसी क्षेत्र के उत्पादन अथवा उत्पत्ति को प्रमाणित करना। किसी भी उत्पादन फल अथवा अन्य वस्तु की उत्पाद की गुणवत्ता उसके मूल स्थान के आधार पर ही निर्भर होती है। जीआई टैग के द्वारा किसानों को बाजार या फिर अन्य निर्माताओं से बंगानापल्ले आम को बाजार में बहुत अच्छी कीमत मिलती है।

जीआई टैग के माध्यम से किसानों को आय की अच्छी प्राप्ति होती है।

बंगानापल्ले आम की विशेषताएं

बंगानापल्ले आम मिठास के लिए आंध्र प्रदेश में आम की किस्मों का मालिक कहा जाता है। आम की इस किस्म को बनगनपल्ली, बंगिनापल्ली, बनगनपल्ली भी कहा जाता है। बंगानापल्ले आम मे फाइबर पूर्ण रूप से पाया जाता है। बंगानापल्ले आम का सेवन करने से त्वचा स्वस्थ रहती है।

मल्लिका आम की विशेषताएं

मल्लिका आम दिखने में चौसा और दशहरी की तरह ही होता है। इसका रंग पीला होता है परंतु या दशहरी के मुकाबले काफी बड़ा होता है। आजकल मल्लिका आम अपने स्वाद के लिए सभी आम की किस्मों को पीछे छोड़ रहा है।

मल्लिका आम का वजन

मल्लिका आम वजन में लगभग 700 ग्राम तक पहुंच चुका है, इसी वजह से लोग इस आम की उच्च कीमत देकर इसे खरीदने के लिए इच्छुक है। बाजारों में मलिका आम, चौसा आम की तुलना में ज्यादा बिकने वाला फल बन चुका है।

मल्लिका आम की लोकप्रियता लखनऊ में काफी बढ़ रही है।

मल्लिका आम भारत में कहां उगता है?

किसानों के अनुसार मल्लिका आम भारत के कर्नाटका तथा तमिलनाडु में व्यावसायिक रूप से उगाए जाते हैं। इनकी खेती का मुख्य क्षेत्र कर्नाटक और तमिलनाडु को ही कहा जाता है जहां इनकी खेती काफी भारी मात्रा में होती है।

साथ ही साथ मल्लिका आम की कीमत भी अच्छी दर पर मिलती है।

मल्लिका आम का पेड़ कैसा होता हैं?

किसानों के अनुसार मल्लिका आम का पेड़ दशहरी आम की तरह ही लंबा होता है। इस पेड़ की पूरी आकृति दिखने में दशहरी आम की तरह ही नजर आती है। परंतु अपने वजन में भारी होने के कारण या दशहरी आम के मुकाबले अलग प्रतीत होता है। मल्लिका आप अपनी विशेषताओं के कारण चौसा और सफेदा जैसे आमों को पीछे छोड़ रहा है लखनऊ में सफेदा जैसे आम को इसने काफी टक्कर दी है।

मल्लिका आम स्वाद, रूप और गुणों से परिपूर्ण

किसानों ने मल्लिका आम को धीरे–धीरे काफी मशहूर कर दिया है। मल्लिका आम रूप और खाने के भरपूर गुणों के मुकाबले आम की सबसे उत्कृष्ट किस्म मानी जाती है। कुछ सालों तक ज्यादातर लोग मल्लिका आम की गुणवत्ता से अनजान थे। तथा नई किस्में होने के कारण बाजारों तथा मार्केट में यह कम मात्रा में ही उपलब्ध थी। मल्लिका जैसे औषधीय गुणों वाली किस्म का आनंद कुछ ही बागबान और विशेष प्रेमी ले रहे थे। परंतु आज या काफी लोगों की पसंद बन चुकी है और आमों की डेढ़ सौ किस्मों में से सबसे उपयुक्त मल्लिका आम की किस्म मानी जाती है।

चार दशक में मशहूर हुई मल्लिका आम की किस्म

लखनऊ में कुछ आम बेचने वालों का यह मानना है कि करीब ४० साल लग गए मल्लिका आम की विशेषता और गुणवत्ता के बारे में जानने के लिए। और जब लोगों ने मल्लिका आम की विशेषताओं को जान लिया, तो आम कि इस किस्म की मांग काफी बढ़ गई। आम की मल्लिका किस्म को खाने के बाद लोग इसकी दुगना कीमत देने के लिए तैयार हो गए। यहां तक कि लोग मल्लिका आम की किस्म का मुंह मांगा दाम देने लगे हैं। डॉ. राजन यह दावा करते हैं, कि मल्लिका आम सभी प्रकार की आमों की तुलना में जैसेरू चौसा आम, दशहरी आम, नीलम आम, हापुस आम, लंगड़ा आम, केसर आम, तोतापुरी आम, हिमसागर आम, बंगानपल्ले आम जैसी किस्मों को मात दे सकता है। कुछ साल पहले तक चौसा और दशहरी आमो ने जो जगह बनाई थी। अब वह जगह मल्लिका आम की किस्म ने स्थापित कर ली है।

मल्लिका आम की किस्म के लिए उपयुक्त मिट्टी

किसानों के लिए मल्लिका आम की फसल सबसे उपयोगी होती है, और इसीलिए इस फसल की उपयोगिता को देखते हुए किसान दोमट मिट्टी या बलुई मिट्टी का इस्तेमाल करते हैं। खेतों को भली प्रकार से जोत लेते हैं उपयुक्त गहराई प्राप्त करने के बाद मिट्टियों को भुरभुरा बना देते हैं।

मल्लिका आम की फसल का बीज उपचार

मल्लिका आम की फसल का बीज उपचार करने के लिए किसान कुछ मिनटों तक डाइमेथोएट के समाधान में पत्थरों को डूबा देते हैं और फिर उसके बाद रोपण की क्रिया को शुरू करते हैं। इन प्रक्रियाओं द्वारा फसलों में किसी भी तरह का कीट या फिर फंगस नहीं लग पाते हैं, ना ही फसल खराब होती है। फसल का बीज उपचार करने का यह सबसे सरल और उपयोगी तरीका है।

मल्लिका आम की फसल के लिए अनुकूलित जलवायु

किसान सबसे उपयुक्त आम की खेती के लिए उष्ण और समशीतोष्ण जलवायु को बताते हैं।

दोनों ही प्रकार की जलवायु मल्लिका आम की फसल के लिए सबसे उपयोगी होती है। तापमान लगभग 23.8 से लेकर 26.6 डिग्री सबसे उत्तम माना जाता है। इस तापमान में मल्लिका फसल की उत्पत्ति काफी अच्छी मात्रा में होती है।

मल्लिका आम की फसल के लिए सिंचाई

किसानों के अनुसार सिंचाई पूर्ण रूप से मिट्टी के प्रकार और जलवायु पर ही निर्भर होती है। बीज रोपण करने से कुछ देर पहले मिट्टियों को भुरभुरा करने के बाद उन में नमी बना लेनी चाहिए, यह सिंचाई का सबसे उत्तम तरीका होता है। लगभग 2 से 3 दिन के अंदर हल्की हल्की सिंचाई करते रहना चाहिए हल्की सिंचाई सबसे उपयोगी होती है। जब बीज आ जाए तो एक बार अच्छी तरह से पूरे खेतों में सिंचाई कर लेनी चाहिए। वर्षा के दिनों में ज्यादा सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती हैं। परंतु जल निकास का उचित साधन बनाए रहे , ताकि किसी भी प्रकार के जलभराव से फसलों को नुकसान ना पहुंचे।

मल्लिका आम के फायदे

मल्लिका आम ना सिर्फ अपने स्वाद बल्कि अपने आवश्यक गुणों के लिए भी जाना जाता।

मल्लिका आम खाने से विभिन्न प्रकार के औषधीय गुणों की प्राप्ति होती है। मल्लिका में मौजूद औषधि गुण हमारे शरीर का संतुलित बनाने में कारगर साबित हैं। त्वचा की चमक, पाचन तंत्र, विटामिंस आदि जैसी महत्वपूर्ण गुण मौजूद होते हैं।

नीलम आम की विशेषताएं

नीलम आम, नीलम आम अपनी विशेषताओं के लिए जाना जाता हैं। क्योंकि यह स्वाद में बेहद ही मीठा होता है। इसकी आकृति बाहर से दिखने में बहुत ही अच्छी लगती है हल्के खिले खिले पीले रंग का होता है। नीलम आम का मुख्य क्षेत्र हैदराबाद को कहा जाता है।

नीलम आम का मुख्य उत्पादन

नीलम आम व्यवसायिक रूप से कर्नाटक तथा तमिलनाडु में उगाए जाते हैं। बेंगलुरु में नीलम आम की कीमत बहुत अच्छे दाम पर मिल जाती है। कहा जाता है कि दक्षिण भारतीय आम, यानी नीलम की माता मल्लिका आम है और इस आम के पिता दशहरी को कहा जाता है। नीलम का आकार माता पिता यानी मल्लिका और दशहरी दोनों से बहुत ही बड़ा होता है। नीलम आम का वजन लगभग 700 ग्राम तक से भी अधिक हो जाता है। वजन के मुकाबले यह बाकी आमों की तुलना में काफी बड़ा होता है।

नीलम आम का बीज उपचार

नीलम आम का बीज उच्चारण करने के लिए किसान रोपण विधि से कुछ मिनट पहले डाइमेथोएट समाधान में पत्थरों के साथ डूबा कर रखते हैं। इस क्रिया से किसी भी प्रकार का कीट नहीं लग पाते। किसान इस प्रक्रिया से फसल को फंगस लगने से सुरक्षित कर लेते हैं।

बीज उपचार की यह प्रतिक्रिया सबसे सर्वोत्तम मानी जाती है।

नीलम आम की बुआई का समय

नीलम आम की फसल किसानों के लिए बहुत ही आवश्यक फसल होती है। क्योंकि इनकी सिंचाई का समय जुलाई और अगस्त के बीच का होता है। जिन क्षेत्रों में वर्षा भारी होती हैं वहां नीलम आम की सिंचाई बरसात के अंत में करते हैं। किसानों द्वारा या महीना बुआई का सबसे उचित माना जाता।

नीलम आम की फसल के लिए अनुकूल जलवायु

उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु नीलम आम की फसल के लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है। नीलम आम की फसल उपयुक्त सभी क्षेत्रों में उगाई जा सकती है। नीलम आम की फसल के लिए उपयुक्त गर्मी का मौसम सबसे अच्छा होता है।उच्च हवाओं के सहयोग द्वारा प्रतिकूल जलवायु पेड़ा. ं को प्रभावित करती हैं। शुष्क मौसम वाले स्थानों में फसल भली प्रकार से पनपती है। नीलाम आम की खेती के लिए तापमान 22 डिग्री सेल्सियस से लेकर 27 डिग्री सेल्सियस सबसे उचित रहता है।

नीलम आम की फसल की सिचाई

नीलम आम की फसल की सिंचाई इनकी मिट्टी के ऊपर निर्भर होती है। जिस प्रकार मिट्टी में नमी होगी उसी प्रकार सिंचाई की जाती है।

लेकिन जब पौधे नए हो तो लगातार हल्की हल्की सिंचाई देते रहना पौधों के लिए सबसे उचित माना जाता है। किसानों के अनुसार फसलों में देने वाली हल्की सिंचाई सबसे से सर्वोत्तम मानी जाती है। पहली सिंचाई बीज रोपण करते समय करनी चाहिए, उसके बाद दूसरी सिंचाई लगभग 2 से 3 दिन के अंतराल पर करनी चाहिए। तीसरी सिंचाई लगभग 5 से 7 दिनों के अंतराल पर करनी चाहिए। जब बरसात का मौसम शुरू हो जाए तो बरसात के आधार पर सिंचाई करना चाहिए। पेड़ों में फल आने के बाद 10 से 15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करना आवश्यक होता है।

नीलम आम की फसल के लिए उपयुक्त मिट्टी

नीलम आम की फसल के लिए किसान सबसे सर्वोत्तम और उपयोगी मिट्टी दोमट मिट्टी को बताते हैं। मिट्टी में बीज रोपण करने के बाद जल निकास की व्यवस्था को भली प्रकार से स्थापित कर लेना चाहिए। ताकि कभी भी वर्षा के मौसम में फसल को नुकसान ना हो। नीलम आम की फसल को आप सभी प्रकार की भूमि और मिट्टी में उगा सकते।

नीलम आम की फसल के लिए उपयुक्त खाद

नीलम आम की फसल के लिए किसान सबसे उपयुक्त खाद गोबर की सड़ी खाद या फिर कम्पोस्ट खाद को फसल के लिए उपयुक्त बताते हैं। नीलम आम की फसल के लिए आपको लगभग 550 ग्राम डाई अमोनियम फास्फेट की आवश्यकता होती है। 850 ग्राम लगभग यूरिया तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति पेड़ के आधार पर आवश्यकता होती है। करीब 20 से 25 किग्रा खूब को मिक्स कर गोबर की खाद में मिलाना उपयुक्त होता है।

नीलम आम की विशेषताएं

नीलम आम की फसल के लिए किसान सबसे उपयुक्त खाद गोबर की सड़ी खाद या फिर कम्पोस्ट खाद को फसल के लिए उपयुक्त बताते हैं। नीलम आम की फसल के लिए आपको लगभग 550 ग्राम डाई अमोनियम फास्फेट की आवश्यकता होती है। 850 ग्राम लगभग यूरिया तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति पेड़ के आधार पर आवश्यकता होती है। करीब 20 से 25 किग्रा खूब को मिक्स कर गोबर की खाद में मिलाना उपयुक्त होता है।

नीलम आम की फसल से किसानों को बहुत लाभ पहुंचता है। नीलम आम की फसल द्वारा किसानों के आय का महत्वपूर्ण साधन बना रहता हैं। क्योंकि इस फसल में ज्यादा कुछ लागत नहीं होती है और काफी मुनाफा भी पहुंचता है।

नीलम आम अपनी मिठास के लिए जाना जाता है। इसीलिए इसको कई देशों में स्पोर्ट्स भी किया जाता है। यदि हम बात करें तो नीलम आम से आय निर्यात का काफी अच्छा साधन बना रहता है।

नीलम आम के गूदे गुच्छे दार होते हैं जो खाने के स्वाद को और बढ़ाता है।

नीलम आम खाने से हमारे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को काफी बढ़ावा मिलता है। यदि हम प्रतिदिन एक कटा हुआ या फिर जूस बनाकर नीलम आम खाते हैं। तो हमे भरपूर विटामिन ए की प्राप्ति होती है।

नीलम आम खाने से त्वचा को कई तरह का फायदा होता है। हमारी त्वचा चमकती रहती है और विटामिन सी और विटामिन ए दोनों महत्वपूर्ण तत्व की प्राप्ति होती है जो त्वचा के लिए बहुत ही अच्छा माना जाता है।

यदि आप अपना वजन कम करना चाहते हैं तो प्रतिदिन आपको एक नीलम आम का सेवन करना चाहिए। शरीर के वजन को कम करने में या बहुत ही कारगर साबित है।

नीलम आम न सिर्फ स्वाद अपितु विभिन्न प्रकार के आवश्यक तत्व के लिए भी जाना जाता है इसमें फाइबर की मात्रा पाई जाती है जो शरीर के लिए उपयोगी है।

मालदा आम की विशेषताए

मालदा आम दिखने में पीले रंग के होते हैं। शुरुआत में इनका रंग पूरी तरह से हरा होता है धीरे–धीरे यह अपने हरे रंग को छोड़ते हुए पूरे पीले रंग को धारण कर लेते हैं। मालदा आम रेशेदार और स्वाद में बेहद ही मीठे होते हैं।

मालदा आम के गुच्छे काफी अच्छे होते हैं जिससे आप जूस की बहुत सारी मात्रा को प्राप्त कर सकते हैं।

यदि आप मालदा आम को ऐसे ही खाते हैं तो आपके मुंह में इनके ढेर सारे रेशे आते हैं जिससे इनका स्वाद और भी बेहतर लगता है। मालदा आम कि यह खूबी है कि यह दुबारा बीज के रूप में सिकुड़ कर फिर बीज रूप धारण कर लेते हैं। मालदा आम के छिलके हल्के होते हैं और इनमें बहुत गठीला पन होता है। मालदा आम खाने वाले यह दावा करते हैं यदि आपने मालदा आम नहीं खाया तो आपने आम का स्वाद ही नहीं जाना है। जो एक बार मालदा आम खा लेता है उसको दोबारा कोई आम की किस्म नहीं पसंद आती हैं।

मालदा आम का उत्पादन

मालदा आम मुख्य रूप से भारत में स्थित पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश के राजशाही में उगता है। मालदा आम को देश और विदेशों में काफी पसंद किया जाता हैं। पटना के दीघा घाट में इस आम की खुशबू और मिठास पूरे देश और विदेशों में फैली हुई है।

मालदा आम की बढ़ती मांग

मालदा आम के स्वाद के चलते कई विदेशी राज्य है जहां इसकी मांग काफी बढ़ जाती है।

हर साल मालदा आम को विदेशी राज्यों में भेजकर निर्यात का साधन बना रहता है।

कुछ ऐसे राज्य है जो मालदा आम की मिठास और खुशबू के दीवाने हैं और हर साल मालदा आम की मांग करते हैं। जैसे दुबई, यूरोप, अमेरिका, इंग्लैंड, स्वीडन और नाइजीरिया आदि देशों में रहने वाले लोग मालदा की मांग करते हैं।

मालदा आम के बगान

किसानों के अनुसार हर साल मालदा में लगभग 33,450 हेक्टेयर दर पर मालदा आम की खेती की जाती है। बढ़ती मांग के चलते मालदा आम कि यह खेती पिछले साल से करीब 300 हेक्टेयर अधिक है। मालदा आम की खेती से आप आम कि इस मालदा किस्म की उपयोगिता का अंदाजा लगा सकते हैं। आम की इस खेती से किसानों को निर्यात में काफी फायदा पहुंचता है।

मालदा आम से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण बातें

प्राप्त की गई जानकारियों के अनुसार मालदा आम के विषय में लोगों का यह कहना है। कि इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया मालदा आम की बहुत बड़ी दीवानी थी। वह भारत से आम की मालदा किस्म को हर साल मंगवाया करती थी।
कहा जाता है कि सिनेमा दुनिया के मशहूर अभिनेता राजकपूर और गायिका सुरैया भी दीघा के बगीचों में घूमने आया करते थे। करीब सन 1952 में बहुत सारे मालदा आम को अपने साथ मुंबई शहर ले गए थे। पेटी भर मालदा आम को ले जाकर वह मालदा आम के स्वाद का मजा लेना चाहते थे।
राजनीतिक दल की बहुत सारी बड़ी हस्तियां मालदा आम की दीवानी थी। कहा जाता है हमारे देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद तथा इंदिरा गांधी जी को भी मालदा आम बहुत पसंद था। कई लोगों ने ही यह भी कहा है। कि जब राजेंद्र प्रसाद दिल्ली आया करते थे, तो वह दीघा आम को काफी याद करते थे। 1962 के करीब जब हमारे राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद जी पटना वापस आये, तो मालदा की बहुत अच्छी फलन बगीचे में लहरा रही थी।
मालदा आम की फसल हर साल देश में जितनी भी हस्तियां कहे, जैसेरू नेताओं, सेलिब्रिटी यानी कलाकारों, उद्योगपतियों आदि को आम की यह मालदा किस्म भेजी जाती थी।
यह मालदा आम से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण जानकारियां थी।

नवाब फिदा हुसैन ने लगाया था मालदा आम का पेड़

मालदा आम के विषय में या महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई है। कि मालदा आम के पेड़ को नवाब फिदा हुसैन ने लगाया था। नवाब फिदा हुसैन लखनऊ के बहुत मशहूर नवाब थे। मालदा आम का या पौधा नवाब फिदा हुसैन पाकिस्तान के करीब इस्लामाबाद के शाह फैसल मस्जिद के इलाके से लाए थे।आम की यह खास किस्म नवाब फिदा हुसैन द्वारा लगाई गई थी। जब नवाब फिदा हुसैन पटना में रहते थे उसी दौरान उन्होंने दीघा के करीब रेलवे क्रॉसिंग पर और कुछ आसपास के इलाकों में मालदा आम के लगभग ५० से भी ज्यादा पेड़ लगाए थे।

मालदा आम के विषय में लोग यह कहते हैं कि नवाब साहब बहुत सी गाय पाले हुए थे। जब कभी दूध बच जाता तो वह बचा हुआ दूध मालदा आम की जड़ों में डाल दिया करते थे।

कुछ टाइम के बाद जब या पेड़ फल देने लगे तो इन फलों में से दूध जैसा पदार्थ निकलना शुरू हो गया था। यही कारण है कि लोग इस आम को दूधिया मालदा के नाम से भी पुकारते हैं। आम की इस किस्म का नाम दूधिया मालदा आम पड़ा। इसके बाद मालदा आम के पेड़ों की सेवा मोहम्मद इरफान ने काफी अच्छे ढंग से की थी। मोहम्मद इरफान की सेवा को देखते हुए लोगों ने इस बगीचे को इरफान बगीचे के नाम से पुकारने लगे। कहां जाता है कि अखिल भारतीय आम प्रदर्शनी मे मालदा आम प्रथम स्थान पर आता है। अपने स्वाद के चलते मालदा आम सभी किस्मों से उत्तम माना जाता है।

प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना के लाभ तथा इसमें आवे. दन करने का तरीका

आज हम आप लोगों को प्रधानमंत्री जी की ऐसी महत्वाकांक्षी योजना के बारे में बताने जा रहे हैं जो खास तौर पर भारत के किसानों के लिए लागू की गई है। इस योजना का नाम "पीएम किसान मानधन योजना" है।

पीएम किसान मानधन योजना का उद्देश्य

इस योजना का मुख्य उद्देश्य देश के किसानों आर्थिक स्थिति में सुधार के साथ साथ उनकी आय में वृद्धि करना है। इस योजना की शुरुआत खासतौर पर उन किसानों के लिए की गई है जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं। जिससे भारत के किसान भुखमरी से बच सकें। इस योजना की शुरुआत वर्ष 2019 में हुई। इस योजना के तहत उन किसानों को आर्थिक सुविधा दी जाती है जो अपनी ढलती उम्र के साथ काम करने में असहाय रहते हैं जिसकी वजह से उन्हें दूसरों पर आश्रित रहना पड़ता है।

पीएम किसान मानधन योजना की विशेषताएँ

इस योजना में आवेदन करने के पश्चात किसानों की उम्र 60 वर्ष से अधिक होने के बाद उन्हें प्रत्येक महीने रुपए 3000 की पेंशन मिलती है। ऐसे में किसानों की बढ़ती उम्र के साथ उन्हें दूसरों के ऊपर आश्रित रहने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

पीएम किसान मानधन योजना की पात्रता

इस योजना में आवेदन करने से पहले आइए हम इस योजना के बारे में कुछ बातें जान लेते हैं। इस योजना का लाभ केवल वही किसान उठा सकते हैं जिनके पास 2 हेक्टेयर या उससे कम भूमि है अर्थात जिन किसानों के पास 2 हेक्टेयर से से अधिक भूमि हैं वे किसान इस योजना का लाभ नहीं उठा सकते। इसके अलावा जिन किसानों की उम्र 18 वर्ष से 40 वर्ष के बीच में है वे किसान ही इस योजना में आवेदन कर सकते हैं।

अगर आपकी उम्र 18 वर्ष है तो आप इसमें आवेदन कर सकते हैं इसके बाद आपको इसमें हर महीने रुपए 55 निवेश करने होते हैं और वहीं जब आपकी उम्र 60 वर्ष से ऊपर हो जाती है तो आपको हर महीने भारत सरकार की ओर से रुपए 3000 दिए जाते हैं।

अगर दुर्भाग्यवश योजना से संबंधित किसान की मृत्यु हो जाती है तो इस स्थिति में उस किसान की पत्नी को पेंशन के तौर पर हर महीने रुपए 1500 रुपए देने का प्रावधान है।

आवेदन प्रक्रिया

प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना में आवे. दन करना बेहद आसान है इसके लिए आप अपने नजदीकी कॉमन सर्विस सेंटर जाकर इस योजना में आवेदन कर सकते हैं। योजना में आवेदन करते समय आपके पास आपका आधार कार्ड, दो पासपोर्ट साइज फोटो, खसरा खतौनी, आदि दूसरे दस्तावेजों की आवश्यकता पड़ेगी।

मुख्यमंत्री लघु सिंचाई योजना में लाभांवित होंगे हजारों किसान.

आवेदन प्रक्रिया

किसानों को सिंचाई के लिए आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मुख्यमंत्री लघु सिंचाई योजना नाम से एक नई योजना शुरूआत की है। इस योजना के तहत वर्ष 2022–23 में प्रदेश हजारों किसान लाभांवित होंगे। लघु सिंचाई विभाग ने इसका प्रस्ताव बनाकर शासन को भेज दिया है। अब विभाग को इसकी स्वीकृति का इंतजार है।

प्रभारी सहायक अभियंता लघु सिंचाई विनय कुमार ने बताया कि इस योजना का मुख्य उद्देश्य कृषि उत्पादन में वृद्धि हेतु कृषकों के निजी सिंचाई साधनों का निर्माण कराकर उन्हें

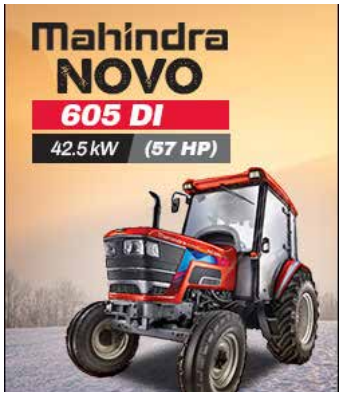

आत्मनिर्भर बनाना है। जिससे प्रदेश के हर खेत मे सुनिश्चित सिंचाई सुविधा उपलब्ध हो सके। तथा प्रदेश के कृषक आधिकारिक खाद्यान्न उत्पादन का प्रदेश व देश के आर्थिक विकास में योगदान कर सकें। उन्होंने इस योजना के तहत 300 बोरिंग कराने का प्रस्ताव शासन को भेजा है। जिसके तहत 60 बोरिंग अनुसूचित जाति व 220 बोरिंग सामान्य जाति के लोगों के लिए लगाए जाएंगे।

सामान्य जाति के लघु एवं सीमान्त किसानों हेतु अनुदान

इन योजना में सामान्य श्रेणी के लघु एवं सीमान्त कृषकों हेतु बोरिंग पर अनुदान की अधिकतम सीमा क्रमश: 5000 रु. तथा 7000 रु. निर्धारित की गई है सामान्य श्रेणी के लाभार्थियों के लिए जोत सीमा 0.2 हेक्टेयर निर्धारित है। सामान्य श्रेणी के कृषकों की बोरिंग पर पम्पसेट स्थापित कराना अनिवार्य नहीं है। परंतु पम्पसेट क्रय कर स्थापित करने पर लघु कृषकों की अधिकतम 4500 रु. व सीमान्त कृषकों हेतु 6000 रु. का अनुदान अनुमन्य है।

अनुसूचित जातिध्जनजाति कृषकों हेतु अनुदान

अनुसूचित जातिध्जनजाति के लाभार्थियों हेतु बोरिंग पर अनुदान की अधिकतम सीमा 10000 रुपए निर्धारित है। न्यूनतम जोत सीमा का प्रतिवर्ष तथा पम्पसेट स्थापित करने की बाध्यता नहीं है। 10000 रुपए की सीमा के अंतर्गत बोरिंग से धनराशि शेष रहने पर रिफ्लेक्स वाल्व, डिलीवरी पाइप, बैंड आदि सामिग्री उपलब्ध करने की अतिरिक्त सुविधा भी उपलब्ध है। पम्पसेट स्थापित करने पर अधिकतम 9000रुपए का अनुदान अनुमान्य है।

एच.डी.पी.ई. पाइप हेतु अनुदान

वर्ष 2012–13 से जल के अपव्यय को रोकने एवं सिंचाई दक्षता में अभिवृद्धि के दृष्टिकोण से कुल लक्ष्य के 25 प्रतिशत लाभार्थियों को 90 एमएम साइज का न्यूनतम 30 मी. से अधिकतम 60 मी. एचडीपीई पाइप स्थापित करने हेतु लागत का 50 प्रतिशत अधिकतम 3000 रुपए का अनुदान अनुमन्य करने जाने का प्रावधान किया गया है। 22 मई 2016 से 110 एमएम साइज के एचडीपीई पाइप स्थापित करने हेतु भी अनुमान्यता प्रदान कर दी गई है।

पम्पसेट क्रय हेतु अनुदान

नि:शुल्क बोरिंग योजना के अंतर्गत नाबार्ड द्वारा विभिन्न अश्वशक्ति के पम्पसेट के लिए ऋण की सीमा निर्धारित है। जिसके अधीन बैंकों के माध्यम से पम्पसेट हेतु ऋण की सुविधा उपलब्ध है। जन. पदवार रजिस्टर्ड पम्पसेट डीलरों से नगद पम्पसेट क्रय करने की भी व्यवस्था है। दोनों विकल्पों में से कोई भी प्रक्रिया अपनाकर आइ. ैएसआई मार्क (प्प् डंता) पम्पसेट क्रय करने का अनुदान अनुमन्य है।

कैसे करें आवदेन

सर्वप्रथम आपको लघु सिंचाई विभाग, उत्तर प्रदेश की आधिकारिक वेबसाइट पर जाना होगा।

यूपी निशुल्क बोरिंग योजना के अंतर्गत लक्ष्यों का निर्धारण

लक्ष्य की प्राप्ति प्रत्येक वर्ष जनपद वार लक्ष्य शासन स्तर पर उपलब्ध कराए गए धनराशि के माध्यम से किया जाएगा।

ग्राम पंचायत के लक्ष्यों का निर्धारण क्षेत्र पंचायत द्वारा किया जाएगा।

लक्ष्य से 25% से अधिक की संख्या में लाभार्थी ग्राम पंचायत द्वारा ग्राम जल संसाधन समिति की सहमति से उपरोक्त अनुसार चयनित किए जाएंगे।

चयनित लाभार्थियों की सूची विकास अधिकारी को प्रस्तुत की जाएगी।

यूपी नि:शुल्क बोरिंग योजना की प्राथमिकताएं एवं प्रतिबंध

बोरिंग के समय इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि जहां बोरिंग की जा रही है वहां खेती है या नहीं।

बोरिंग के स्थान पर खेती होना अनिवार्य है।

अतिदोहितधक्रिटिकल विकास खंडों में कार्य नहीं किया जाएगा।

बोरिंग के संबंध में इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि प्रस्तावित पंपसेट से लगभग 3 हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि की सिंचाई हो सके।

वह विकास खंड जो सेमी क्रिटिकल कैटेगरी में है उनमें नाबार्ड द्वारा स्वीकृत सीमा के अंतर्गत ही चयन किया जाएगा।

पंपसेट के मध्य दूरी नाबार्ड द्वारा जनपद विशेष के लिए निर्धारित दूरी से कम नहीं होनी चाहिए।

समग्र ग्राम विकास योजना एवं नक्सल प्रभावित समग्र ग्राम विकास योजना के अंतर्गत चयनित किए गए ग्रामों में सर्वोच्च प्राथमिकता के आधार पर बोरिंग का कार्य किया जाएगा।

उपलब्ध धनराशि से समग्र ग्राम विकास योजना एवं नक्सल प्रभावित समग्र ग्राम विकास योजना के ग्रामों को सर्वप्रथम पूर्ति की जाएगी।

यूपी निशुल्क बोरिंग योजना के अंतर्गत सामग्री की व्यवस्था

इस योजना के अंतर्गत पीवीसी पाइप का प्रयोग किया जाएगा।एमएस पाइप का उपयोग केवल उन क्षेत्रों में किया जाएगा जहां हाइड्रोजियोलॉजिकल परिस्थितियों के कारण पीवीसी पाइप का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

एसएम पाइप का प्रयोग ऐसे जिलों में चिन्हित क्षेत्रों के संबंधित अधीक्षण अभियंता लघु सिंचाई वृत से अनुमोदन प्राप्त करके किया जाएगा।

पीवीसी पाइप से होने वाली बोरिंग के लिए पीवीसी पाइप एवं अन्य सामग्री की व्यवस्था कृषकों द्वारा की जाएगी।

जिलाधिकारी के अंतर्गत एक समिति का गठन किया जाएगा जिसके माध्यम से अनुदान स्वीकृति करने हेतु पीवीसी पाइप तथा अन्य सामग्री की दरें निर्धारित की जाएगी।

पीएम मोदी ने जारी की किसान सम्मान निधि की 11वीं किस्त, ऐसे चेक करें लिस्ट में अपना नाम

किसानों को 21,000 करोड़ रुपये से अधिक की सम्मान निधि राशि सीधे उनके बैंक खातों में ट्रांफफर कर दी है। पीएम मोदी जी द्वारा यह राशि शिमला में आयोजित 'गरीब कल्याण सम्मेलन' कार्यक्रम के दौरान किसानों के खाते में सीधे ट्रांसफर की गई है। इसके बाद उन्होंने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के द्वारा लाभार्थियों से बातचीत भी की।

इस किस्त के साथ ही केंद्र सरकार द्वारा अब तक किसानों के खाते में 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक की रकम ट्रांसफर हो चुकी है। इस योजना की पहली किस्त 1 दिसंबर 2018 से 31 मार्च 2019 के बीच जारी की गई थी। तब से भारत के किसानों को सालाना 6000 रुपये दे रही है। इस योजना की 11वीं किस्त ट्रांसफर करने के कार्यक्रम के दौरान दिल्ली से केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर भी मौजूद रहे।

किसान सम्मान निधि की 11वीं किस्त : आवश्यक जानकारी

अगर आप भी किसान भाई हैं और पीएम जी की इस योजना का लाभ उठाना चाहते हैं या आप इस योजना में जुड़े होने के बावजूद किसी कारणवश आपके रुपये खाते में नही आ रहे हैं तो इस योजना का लाभ उठाने के लिए आप अपनी केवाईसी अपडेट करा लें। केवाईसी अपडेट करने की अंतिम तारीख 31 मई ही है। अगर आप अपनी केवाईसी आखिरी तारीख तक अपडेट नहीं कराते हैं तो पीएम किसान की 2000 रुपये किस्त का लाभ नहीं ले सकेंगे। पीएम किसान निधि योजना के तहत हर साल प्रत्येक लाभार्थी को रुपए 6000 प्राप्त होते हैं। यह राशि एक साथ ना आकर रुपए 2000 की तीन किस्तों में किसान को मिलती है।

इस तरह ऑनलाइन अपडेट करें

स्टेप 1. पीएम किसान की अधिकारिक वेबसाइट पर जाएं
स्टेप 2. दाईं ओर दिए गए विकल्पों की मज़ल्ब पर क्लिक करें।
स्टेप 3. अपना आधार कार्ड नंबर, कैप्चा कोड दर्ज करके सर्च पर क्लिक करें।
स्टेप 4. अपना मोबाइल नंबर डालें जो आधार कार्ड से लिंक हो।
स्टेप 5. अब 'गेट ओटीपी' पर क्लिक करके प्राप्त हुआ रोटी भी दर्ज करें। इसके साथ ही अभी केवाईसी अपडेट हो जाएगी।

पीएम किसान में लाभार्थी की स्थिति देखने का यह है प्रोसेस

स्टेप 1. पीएम किसान सम्मान निधि की अधिकारिक वेबसाइट— pmkisan-gov-पद पर जाएं।
स्टेप 2. 'Beneficiary Statù' विकल्प पर क्लिक करें।
स्टेप 3. आधार नंबर खाता नंबर और अपना मोबाइल नंबर से किसी एक का चयन करें।
स्टेप 4. इसके साथ आप 'Get data' पर क्लिक करके अपना स्टेटस देख सकते हैं।

अब होगी ड्रोन से राजस्थान में खेती, किसानों को सरकार की ओर से मिलेगी 4 लाख की सब्सिडी

किसानों के लिए केंद्र सरकार और राज्य सरकार कई प्रकार के योजनाओं का संचालन कर रही है, जिससे किसानों की आय में वृद्धि हो और कम से कम समय में कार्य हो. बजट घोषणा के दौरान राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने ड्रोन से खेती (हतपबनसजनतम क्तवदम) करने की योजना जारी की थी। इस योजना से 40 करोड़ रुपए तक सब्सिडी का प्रावधान किया गया है. इस योजना के तहत यदि कोई भी कस्टम हायरिंग सेंटर ड्रोन को खरीदेगा तो सब्सिडी मिलेगी और फिर किसान उससे ड्रोन किराए पर ले सकते है। यदि किसान भी ड्रोन खरीदना चाहे तो खरीद सकता है। किसानों को इस योजना से काफी फायदा मिलेगा. वो काम कीमत पर ड्रोन खरीद या किराए पर ले सकते है।

योजना से किसानों का फायदा

इस योजना से किसानों का कई प्रकार से फायदा होगा। जैसे— किसानों का समय बचेगा ड्रोन कम से कम समय में छिड़काव का काम कर देगा। यदि पुराने तरीके से इस काम को किया जाए तो बहुत समय लगेगा साथ ही बहुत मेहनत भी। यदि किसान 2–3 मजदूर लगाए तो बहुत खर्च भी हो जायेगा। जैसे— 1 मजदूर की कीमत 400 रुपए तो 3 मजदूर 1200 रुपए में आएंगे। जबकि ड्रोन सिर्फ 300 से 400 के बीच में आ जाएगा. ड्रोन से हर जगह बराबर का छिड़काव होगा जबकि मजदूर कही कम तो कही ज्यादा छिड़क. ाव कर देंगे।

10 मिनट में 1 एकड़ जमीन पर छिड़काव

कृषि में किसी फसल के उपज के लिए कई स्टेप होते है, जैसे— कटाई, सिंचाई और साथ द्द साथ कीटनाशक छिड़काव भी जरूरी है. यदि कीटनाशक का छिड़काव न किया जाए तो फसल बर्बाद हो सकती है. अभी के समय लोग कीटनाशक के छिड़काव के लिए पेटीनुमा चीज को कंधो में टांगकर स्प्रे के द्वारा छिड़काव करते है. 1 एकड़ जमीन के लिए अगर इस पेटीनुमा स्प्रे से छिड़काव किया जाए तो 3 से 4 घंटे लग सकते है. साथ ही कीटनाशक से छिड़काव करने वाले किसान के शरीर को भी बहुत नुकसान पहुंचता है. वही , ड्रोन से इतने ही क्षेत्र में छिड़काव किया जाए तो 10 मिनट में हो जाएगा और किसान के शरीर भी बचा रहेगा।

केन्द्र सरकार ने 14 फसलों की 17 किस्मों का समर्थन मूल्य बढाया

केन्द्र की मोदी सरकार ने किसानों के हक में एक और महत्वपूण ि फैसला लिया है। सरकार ने 14 फसलों की 17 किस्मों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में बढ़ोतरी की है। इनमें मुख्य रूप से धान के समर्थन मूल्य में 100 रुपए की बढ़ोतरी की है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति इसकी मंजूरी दी है। सरकार द्वारा तय की गई कीमतें इन फैसलों के औसत उत्पादन लागत से पचास फीसदी अधिक है।

सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने बताया कि सरकार लगातार किसानों के हित में काम कर रही है। किसानों को दी जा रहीं सुविधाओं के चलते उत्पादन में बंपर वृद्धि हुई है। खरीफ की फसलों के उत्पादन में 2.5 फीसदी वृद्धि का अनुमान लगाया जा रहा है। सरकार किसानों की आय दोगुना करने के संकल्प के साथ बीते आठ साल में कई दफा एमएसपी भी तेजी से बढ़ाती रही है।

ऐसे तय होती है एमएसपी

केन्द्र सरकार प्रत्येक वर्ष कमीशन फॉर एग्रीकल्चर कॉस्ट एंड प्राइज (सीएसीपी) [Commission for Agricultural Costs & Prices(CACP), की सिफारिश पर न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) तय करती है। इसके लिए सरकार ने लागत प्लस पचास फीसदी का फार्मूला तय कर रखा है। यह सरकार की तरफ से किसानों को मिलने वाला तय मूल्य है।

ये हैं प्रमुख प्रमुख फसलें

धान, बाजरा, मक्का, ज्वार, मूंगफली, मूंग, तिल, सन, कपास, सोयाबीन, उड़द आदि खरीफ की फसलें हैं। इनकी बुवाई जून से जुलाई तक होती हैं। जबकि नवंबर से दिसंबर में कटाई होती है।

इन फसलों पर इतना बढ़ाया गया है एमए. सपी

1— धान(सामान्य व ग्रेड ए) 100 रु.
2— ज्वार (हाइब्रिड व मालदंडी) 232 रु.
3— बाजरा 100 रु.
4— मक्का 92 रु.
5— मूंग 480 रु.
6— उड़द 300 रु.
7— मूंगफली 300 रु.
8— सोयाबीन (पीला) 350 रु.
9— तिल 523 रु.
10— कपास 354 रु.

गेहूं निर्यात पर रोक, फिर भी कम नहीं हो रहीं कीमतें

गेहूं निर्यात पर प्रतिबंध (Wheat Export Ban – May 2022) के बावजूद भी घरेलू बाजार में गेहूं की कीमतें कम नहीं हो रहीं हैं। रोक के बाद 14 दिन में खुदरा बाजार में गेहूं की कीमत में महज 56 पैसे की गिरावट हुई है। उछलते वैश्विक दाम और गेहूं उत्पादन में कमी के चलते गेहूं की कीमतों में वृद्धि हुई है। भारत में 13 मई को गेहूं निर्यात पर प्रतिबंध लगाया गया था। उस वैश्विक बाजार में इसका भाव 1167.2 डॉलर प्रति बशल था। 18 मई को यह बढ़कर 1284 डॉलर प्रति बशल (27.216 रूपये प्रति किलो) तक पहुंच गया। हालांकि 25 मई को इसमें फिर गिरावट हुई। और 26 मई को इसकी कीमतें घटकर 1128 डॉलर प्रति बशल हो गई।

केडिया एडवाइजरी के निदेशक अजय केडिया का कहना है कि वैश्विक बाजार में गेहूं की कीमतों में तेजी आ रही है। इसके अलावा भारत में गेहूं उत्पादन में गिरावट भी महंगाई का मुख्य कारण है। वैश्विक बाजार में जब तक दाम नहीं घटेंगे, तब तक घरेलू बाजार में भी गेहूं के भाव में गिरावट की संभावना कम है।

गेहूं के भाव में गिरावट की संभावना कम है।

उत्पादन कम हुआ, मांग बढ़ी

इस साल गेहूं का उत्पादन कम हुआ है, जबकि वैश्विक स्तर पर गेहूं की मांग ज्यादा बढ़ी है। देश मे गेहूं भंडारण पेट भरने के लिए ही काफी है।

गरम तवे पर छींटे सी राहत

तारीख 13 मई 2022, कीमत प्रति क्वांटल 2334, कीमत प्रति किलो 23.34

तारीख 26 मई 2022, कीमत प्रति क्विंटल 2278, कीमत प्रति किलो 22.78

सस्ता प्रति क्विंटल 56 पैसे

देश में इस साल गेहूं उत्पादन में 7–8% कई कमी की आंशका है।

साल 2021–22 में 10.95 करोड़ गेहूं का उत्पादन हुआ है।

भारत 21 मार्च 2022 तक कुल 70.30 लाख टन गेहूं निर्यात (wheat export) कर चुका है।

वैश्विक स्तर पर 14 साल बाद गेहूं पर महंगाई हुई है।

रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण भारत ने क्यों लगाया गेंहू पर प्रतिबंध, जानिए संपूर्ण ब्यौरा

भारत ने रूस यूक्रेन के कारण गेंहू के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया है। दुनिया के विशेषज्ञ इसे दुनिया के लिए एक बहुत ही गंभीर समस्या मान रहे हैं। इस भीषण युद्ध के चलते पहले से ही पूरी दुनिया गेहूं की गंभीर परेशानी से जूझ रही है। जिसकी वजह से विश्व के विकसित और विकासशील देशों में इसके बुरे असर देखने को मिल रहे हैं।

आपको बता दे रूस यूक्रेन जंग के कारण ऐसी आशंका जताई जा रही है कि दुनिया भर में महंगाई और तेजी से बढ़ेगी। इसमें पहले ईंधन और उसके बाद गेहूं सबसे ज्यादा चर्चा में है। कुछ समय पहले भारत दुनिया में गेहूं का निर्यात कर देशों की मदद करने की बातें कर रहा था लेकिन हाल ही में सरकार ने गेहूं के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया है। भारत सरकार के इस फैसले की वजह से गेहूं के अंतरराष्ट्रीय कीमतों में उछाल बताया जा रहा है। लेकिन वजह कुछ भी हो भारत सरकार के इस फैसले से संपूर्ण विश्व पर एक गंभीर खतरा होने की आशंका जताई जा रही है।

भारत द्वारा गेंहू का निर्यात

भारत धीरे धीरे गेहूं का एक निर्यातक देश बनता जा रहा है। भारत के पास इतना स्टॉक है कि वह अपने देश की जनता का पेट भरने के साथ–साथ एक करोड़ टन तक गेहूं का निर्यात भी कर सकता है। इस वर्ष भारत मार्च के तीसरे सप्ताह तक लगभग 70 लाख टन गेहूं का निर्यात अपने पड़ोसी देशों को कर चुका है। जिनमें बांग्लादेश, श्रीलंका और UAE जैसे कई देश भी सम्मिलित हैं। भारत को अपने पड़ोसी देशों के साथ गेहूं निर्यात के संबंध बनाए रखने के साथ–साथ अपने 80 करोड़ गरीबों के पेट भरने की भी चिंता है।

पीएम कुसुम योजना में पंजीकरण करने का दावा कर रहीं फर्जी वेबसाइट नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय की एडवाइजरी

पीएम कुसुम योजना में पंजीकरण करने का दावा कर रहीं फर्जी वेबसाइट को लेकर नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय ने जारी की अपनी एडवाइजरी

नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एमएनआरई) (Ministry of New and Renewable Energy (MNRE) ने अपना सुझाव देते हुए कहा है कि अपने व्हाट्सएप एसएमएस पर ऐसी किसी भी लिंक पर क्लिक ना करें जो प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान (पीएम कुसुम) योजना के लिए पंजीकरण का दावा करते हैं अन्यथा इससे आपको भरी नुकसान उठाना पड़ सकता है।

क्या है पीएम–कुसुम योजना ?

नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा जारी की गई इस योजना के तहत आपको अपना सोलर पंप स्थापित करने और कृषि पंपों के सोलाराइजेशन के लिए सब्सिडी दी जाती है। जिससे आपको अधिक रुपए खर्च करने की जरूरत नहीं होगी। लेकिन इस योजना के लागू होने के बाद से ही कई सारी फर्जी वेबसाइट पीएम कुसुम योजना में पंजीकरण करने दावा कर रहीं हैं जिसका नुकसान कई बार आम लोगों को उठाना पड़ता है।

इन फर्जी वेबसाइट के माध्यम से आम जनता को नुकसान ना हो इसके लिए मंत्रालय–एमएनआरआई परामर्श जारी किया गया है।

एनएमआरआई एडवाइजरी

एनएमआरआई ने अपनी एडवाइजरी में कहा है कि योजना लागू होने के बाद कुछ वेबसाइट द्वारा स्वयं को पीएम कुसुम के लिए पंजीकरण पोर्टल होने का दावा किया गया है। ऐसी वेबसाइट लोगों को आर्थिक नुकसान पहुंचा रही हैं जो लोग इन वेबसाइट में रुचि लेते हैं उन लोगों से यह वेबसाइट धन की वसूली कर रही हैं और उनके बारे में जानकारी एकत्र कर रही हैं।

नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा वेबसाइटों से होने वाले नुकसान को टालने के लिए पहले भी सार्वजनिक नोटिस जारी करके लोगों को सलाह दी थी कि वे इस तरह की वेबसाइटों में पंजीकरण फीस न जमा करें और ना ही उन्हें अपनी जानकारी दें। जिसके चलते शिकायतें प्राप्त होने पर इन फर्जी वेबसाइटों के खिलाफ कार्रवाई की गई है और अनेक पंजीकरण पोर्टलों को ब्लॉक कर दिया गया है, लेकिन इसके बावजूद भी व्हाट्सएप और अन्य साधनों के द्वारा लाभार्थियों को बहकाया जा रहा है।

इसलिए मंत्रालय यह परामर्श देता है कि इस योजना में रुचि रखने वाले लोग ऐसी किसी भी फर्जी वेबसाइट में जाकर व्यक्तिगत जानकारी देने या धन जमा करने से बचें और वेबसाइट के बारे में संपूर्ण जानकारी प्राप्त करके उसकी प्रमाणिकता की जांच करें।

मंत्रालय प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा और उत्थान महाअभियान योजना लागू कर रहा है जिसके अंतर्गत कृषक को सोलर पंप स्थापित करने और कृषि पंपों के सौरकरण के लिए सब्सिडी दी जाती है। किसान २ मेगावाट तक ग्रिड से जुड़े सौर विद्युत संयंत्रों को भी स्थापित कर सकते हैं।

यह योजना राज्य सरकारों द्वारा निर्धारित विभागों के द्वारा लागू की जा रही है जिसकी संपूर्ण जानकारी एमएनआरआई की वेबसाइट www-nmre-gov-in- पर उपलब्ध है।

योजना में भाग लेने के लिए पात्रता और क्रियान्वयन प्रक्रिया संबंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए मंत्रालय द्वारा जारी की गई वेबसाइट http://www-mnre-gov-पद या पीएम–कुसुम सेंट्रल पोर्टल https://pmkusum-mnre-gov-पद पर उपलब्ध है और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए टोल फ्री नंबर 1800–180–3333 डायल करके इस योजना संबंधी संपूर्ण जानकारी आप प्राप्त कर सकते हैं।

धान की लोकप्रिय किस्म पूसा-1509 कम समय और कम पानी में अधिक पैदावार

धान की कई किस्में हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं इनमें से एक किस्म पूसा—1509 है जो किसानों को मालामाल कर रही है। एक एकड़ में रुपए 75000 तक की लागत देती है जिससे किसान की आर्थिक स्थिति में बहुत अच्छा असर पड़ता है।

इस किस्म की धान लगाने से मुख्य फायदा यह है कि धान की कटाई होने के बाद हम उस खेत में सब्जियां भी लगा सकते हैं, ऐसे में किसान गेहूं लगाने के पहले सब्जियों से काफी रुपए कमा लेते हैं जिससे उनकी आय बढ़ जाती है।

यह फसल न केवल कम दिनों में पकती है बल्कि इसकी खेती करने से किसानों को बहुत लाभ मिलता है इसलिए कई लोगों का कहना है कि धान की यह किस्म पूसा—1121 की जगह ले सकती है।

पूसा—1509 किस्म का दबदबा क्यों

धान की पूसा—1509 किस्म के आने के पहले किसान धान की पूसा—1121 नमक किस्म की खेती करते थे। इसकी खेती करने में किसानों को कुछ दिक्कत आती थी। जैसे इस प्रकार की किस्म के पौधों की ऊंचाई अधिक होती थी। शुरू से लेकर फसल के तैयार होने में लगभग 5 महीने का वक्त लगता था और अगर कटने पर एक रात खेत में रुक गई तो 15–20% तो खेत में ही झड़ जाती थी। जिसके कारण किसानों का काफी नुकसान हो जाता था। लेकिन पूसा—1509 किस्म में ये सब परेशानियां नहीं आतीं।

यह किस्म पूसा—1121 का उन्नत रूप है इसलिए इस किस्म की मांग ज्यादा है। इसके अलावा इस किस्म की खेती करने में पानी की कम मात्रा का इस्तेमाल होता है जिससे पानी की बचत होती है।

धान की यह किस्म किसानों को नुकसान दे सकती है

धान की इस केस में इतनी खूबियां होने के बावजूद भी कुछ खामियां भी हैं। देश के कुछ राज्यों जैसे पश्चिम बंगाल, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा आदि राज्यों में बासमती जो सबसे पॉपुलर धान की किस्म थी उसमें एक दिक्कत सामने आ गई है।

अभी तक ठीक काम कर रहे धान की इस किस्म में कुछ खामियों के कारण सरकार द्वारा इसके बीज वापस लिए जा रहे हैं इसलिए जो भी किसान धान कि इस किस्म की फसल करते हैं वह अब सावधान हो जाएं। ऐसा ठीक उसी प्रकार हुआ है जिस प्रकार किसी कंपनी की गाड़ी में खराबी आ जाने के कारण वह कंपनी उस गाड़ी को वापस ले लेती है।

सरकार द्वारा ऐसा अहम फैसला इसलिए लिया गया है ताकि किसानों को ज्यादा नुकसान का सामना ना करना पड़े। अगर आप भी धान की किस्म के बीज वापस करना चाहते हैं तो आप २१ मई के पहले वापस कर सकते हैं। इसके लिए आपको खरीदी की ओरिजिनल रसीद दिखानी पड़ेगी तभी आप इस किस्म के बीजों को वापस कर सकते हैं। बीज वापसी के बदले किसानों को उनका पैसा या फिर नए बीज दिए जाएंगे।

इतने पॉपुलर बीज को क्यों लिया वापस लेने का फैसला

जानकारी के मुताबिक एक किसान ने इस बीज के लिए शिकायत की थी जिसके कारण पूसा ने इसका टेस्ट किया जिसमें पता चला कि इसकी उपज सिर्फ 40 फीसदी है जो कि 80 से 90 फीसदी होना चाहिए इसीलिए सरकार द्वारा यह बीज वापस लिया जा रहा है।

खराबी सिर्फ एक लाट में थी, जिसकी वजह से 25 फरवरी से 3 अप्रैल 2022 तक की अवधी वाले कर्नाल क्षेत्र से बिक्री हुए एक लाट को वापस लिया जा रहा है। उस बिक्री की रसीद दिखा के किसान भाई बदले में नया बीज या पैसे वापस ले सकते हैं। किसान भाई क्षेत्रीय केंद्र करनाल, फोन: 018 42267169 पर बात कर सकते हैं।

पूसा बासमती चावल की रोग प्रतिरोधी नई किस्म PB1886, जानिए इसकी खासियत

पूसा बासमती 1692 कम से कम समय में धान की फसल का उत्पादन

वर्तमान समय में हमारे देश में चावल की कई प्रकार की किस्में बोई जाती हैं। इन किस्मों में कुछ किस्में किसानों के लिए लाभदायक, कुछ किस्में किसानों के लिए कम लाभदायक और वहीं दूसरी ओर बात की जाए तो कुछ किस्मों से किसानों को नुकसान भी होता है।
इसी सब को देखते हुए कृषि विभाग द्वारा चावल की एक नई किस्म पूसा 1692 बनाई गई है जो कि पूसा 1509 और पूसा 1121 के बीच की किस्म है।

धान एक खरीफ की फसल है क्योंकि हम जानते हैं कि खरीफ की फसल बोने का समय नजदीक आ रहा है, ऐसे में किसानों की सबसे ज्यादा नजर बासमती की नई किस्मों में है जो उन्हें अधिक से अधिक लाभ दे सके। जिन किसानों को कम से कम समय में धान की फसल का उत्पादन करना होता है यह फसल उन किसानों के लिए विकसित की गई है।

इस किस्म को पूसा ने जून 2020 में विकसित किया है। आंक. ड़ों के मुताबिक किसान की आय फसल के दाम बढ़ने से नहीं बल्कि फसल की पैदावार बढ़ने से बढ़ती है। इसी सब को देखते हुए पूसा ने धान की यह किस्म पूसा 1692 विकसित की है जिस की पैदावार पूसा की अन्य किस्मों से अधिक बताई जा रही है। ऐसे में यह किस्म किसानों के लिए बहुत अधिक लाभ. दायक साबित हो सकती है।

पूसा बासमती 1692 की खासियत

पूसा ने इस किस्म की खासियत के बारे में बताया है कि यह किस्म बहुत ही कम समय में तैयार होने वाली किस्म है। इस किस्म की फसल लगभग 115 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। ऐसे में किसान गेहूं बोने के पहले खेत में दूसरी प्रकार की सब्जियां उगाकर और अधिक लाभ पा सकते हैं।

हमारे देश में धान की खेती बहुत बड़ी मात्रा में की जाती है। धान की कई प्रकार की किस्में होती हैं जिनमें से एक किस्म PB1886 है। भारतीय किसान धान की इस किस्म की रोपाई 15 जून के पहले कर सकते हैं। जो 20 अक्टूबर से 15 नवंबर के बीच पककर तैयार हो जाती है।

हमारे देश में कृषि को अधिक उन्नत बनाने के लिए सरकार की तरफ से नए नए बीज विकसित किए जा रहे हैं। और फसलों को और अधिक लाभदायक बनाने के लिए कृषि शोध संस्थानों की तरफ से फसलों की नई नई किस्में विकसित की जा रही हैं। यह किस्म न केवल फसलों की पैदावार में वृद्धि करती है। बल्कि किसानों की आय में भी वृद्धि करती हैं।

इसी कड़ी में पूसा ने बासमती चावल की एक नई किस्म विकसित की है, जिसका नाम PB1886 है। बासमती चावल की यह किस्म किसानों के लिए फायदेमंद हो सकती है। यह किस्म बासमती पूसा ६ की तरह विकसित की गई है। जिसका फायदा भारत के कुछ राज्यों के किसानों को मिल सकता है।

रोग प्रतिरोधी है बासमती की यह नई किस्म

बासमती की यह नई किस्म रोग प्रतिरोधी बताई जा रही है। बासमती चावल की खेती में कई बार किसानों को बहुत अधिक फायदा होता है तो कई बार उन्हें नुकसान का भी सामना करना पड़ता है।धान की फसल को झौंका और अंगमारी रोग बहुत अधिक प्रभावित करते हैं।

अगर हम झौंका रोग की बात करें इस रोग के कारण धान की फसल के पत्तों में छोटे नीले धब्बे पड़ जाते हैं और यह धब्बे नाव के आकार के हो जाने के साथ पूरी फसल को बर्बाद कर देते हैं। इस वजह से किसान को भारी नुकसान का सामना करना पड़ता है।
इसके साथ ही अंगमारी रोग के कारण धान की फसल की पत्ती ऊपर से मुड़ जाती है, धीरे—धीरे फसल सूखने लगती है और पूरी फसल बर्बाद हो जाती है।
उपरोक्त इन दोनों कारणों को देखते हुए पूसा ने इस बार धान की एक नई प्रकार की किस्म विकसित की है कि यह दोनों रोगों से लड़ सके। इसके साथ ही पूसा द्वारा यह समझाइश दी गई है कि पूसा की इस किस्म को बोने के बाद कृषक किसी भी प्रकार की कीटनाशक दवाओं का छिड़काव न करें।
धान की यह किस्म क्षेत्र की जलवायु के हिसाब से विकसित की गई है। इसलिए इसका प्रभाव केवल कुछ ही क्षेत्रों में हैं। जहां की जलवायु इस किस्म के हिसाब से अनुकूल नहीं हैं, उस जगह इस किस्म की धान नहीं होती है।
इस किस्म के पौधों को 21 दिन के लिए नर्सरी में रखने के बाद रोपा जा सकता है। इसके साथ ही किसान भाई इस फसल को 1 से 15 जून के बीच खेत में रोप सकते हैं। जो कि नवंबर महीने तक पक कर तैयार हो जाती है। इसलिए इस फसल की कटाई नवंबर में हीं की जानी चाहिए।

krishan@merikheti.com | www.merikheti.com